# ज्ञानामृत

जून, 1984
वर्ष 19 ❋ अंक 12
मूल्य 1.35

एक राजयोगी परमात्मा के सत्य परिचय को जानकर आत्मस्वरूप में स्थित हो प्रेमपूर्वक परमात्म-स्मृति का स्विच आन करता है। वह दैवी गुणों की धारणा करता है जिससे उसे परमात्मा से सर्वशक्तियों की प्राप्ति होती है।

न्यु पलासिया इन्दौर में नवनिर्मित ओम शान्ति भवन के उद्घाटन अवसर पर आयोजित 'मानव एकता आध्यात्मिक सम्मेलन' में मंच पर (बाएं से) ब्र० कु० ओमप्रकाश जी, भ्राता रामकिशोर शुक्ल, विधान सभा अध्यक्ष म०प्र०, भ्राता गोवर्धन लाल ओझा, मुख्य न्यायाधीश म० प्र०, ब्र० कु० दादी प्रकाशमणि जी, दादी जानकी जी, भ्राता बी० डी० जत्ती, पूर्व उपराष्ट्रपति, गयाना के उच्चायुक्त भ्राता स्टीव नारायण जी, ब्र० कु० जगदीश जी।

माउँट आबू स्थित 'विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक संग्रहालय' के वार्षिक उत्सव में सम्बोधन करते हुए भ्राता आर० एम० अग्रवाल, मुख्य सचिव दिल्ली प्रशासन। उनके दाएं ब्र० कु० दादी निर्मल शान्ता जी, तथा प्रसिद्ध फ़िल्म अभिनेत्री बहन कामिनी कौशल विराजमान हैं।

माउँट आबू में हुए 'बच्चों के लिये नेता-शिविर' में भाग लेने आए बच्चों का समूह 'ओम शान्ति भवन' के समक्ष

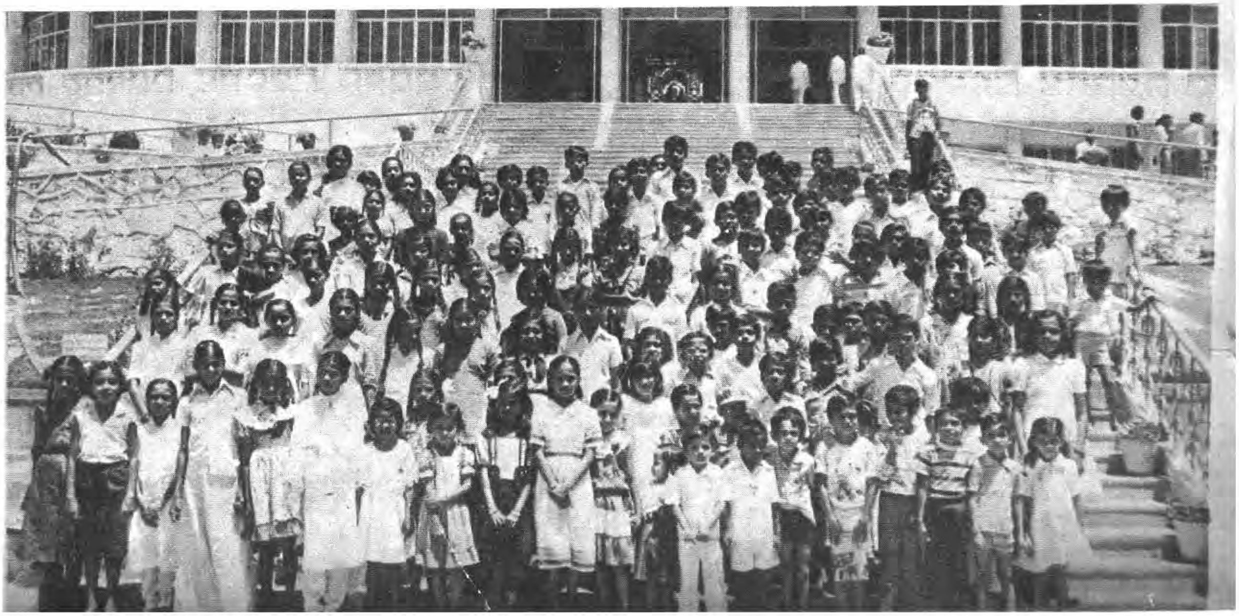

बारीपदा में आयोजित 'मानव दिव्यीकरण आध्यात्मिक सम्मेलन' में भ्राता पी० के० दास, अध्यक्ष उड़ीसा विधान सभा सम्बोधन करते हुए। ब्र० कु० रानी, भ्राता एन०सी० मुकर्जी उनके बाएं तथा ब्र० कु० निरुपमा दाएं विराजमान हैं।

नवरंगपुर (उड़ीसा) में एक आध्यात्मिक समारोह में सम्बोधन करते हुए भ्राता हबीबुला खान राजस्व मन्त्री उड़ीसा। वहां के एस० डी० ओ० भ्राता जे० के० पटनायक, ब्र० कु० कमलेश तथा अन्य विराजमान हैं।

शाहबाद लायन्स क्लब में आध्यात्मिक कार्यक्रम में ब्र० कु० प्रेमजी, लायन्स क्लब के प्रेजीडेंट ब्र० कु० रतना व सेक्रेटरी द्वारकानाथ जी बैठे हैं।

जावरा में गीता ज्ञान राजयोग प्रदर्शनी का उद्घाटन करते हुए माननीय कुंवर भारतसिंह परिवहन एवं गृह राज्य मन्त्री म० प्र०।

धर्मशाला में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी के उद्घाटन के पश्चात् ब्र० कु० दादी चन्द्रमणि जी मुख्य अतिथि भ्राता एस० एस० मदन, आई० ए० एस०, अतिरिक्त उपायुक्त को ईश्वरीय सौगात देते हुए।

Regd No. 10563/65-D(E)-70

कोलार में ब्र० कु० अम्बिका, भ्राता रामकृष्ण हैगडे मुख्य मन्त्री कर्नाटक को बंगलोर स्थित विश्व शान्ति राजयोग भवन में पधारने का निमन्त्रण देते हुए।

धर्मशाला में आयोजित विश्व शान्ति आध्यात्मिक सम्मेलन के अवसर पर सम्बोधन करते हुई दादी चन्द्रमणि जी। उनकी दाईं तरफ ब्र० कु० चक्रधारी जी तथा बाईं ओर भ्राता बी० एस० चौहान अतिरिक्त जिला मजिस्ट्रेट तथा भ्राता दर्शन लाल गुप्ता विराजमान हैं।

फिल्लौर में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन एस० डी० एम० कर रहे हैं।

बारीपदा में आयोजित 'मानव दिव्योकरण सम्मेलन का उद्घाटन करते हुए भ्राता बिचत्रानन्द कार, सम्पादक 'मात्रभूमि'।

चान्दनी चौक-दिल्ली सेवाकेन्द्र द्वारा आयोजित आत्मिक प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् ब्र० अमृता से भ्राता महेन्द्र कुमार जैन सदस्य नगर चित्रों पर समझ रहे हैं।

# अमृत-सूची


| क्रम सं० | विषय | | | पृष्ठ |
|---|---|---|---|---|
| १. | सारे विश्व तथा वायुमण्डल में परिवर्तन | ... | ... | १ |
| २. | एक स्नेहशील, उत्साहवर्धक प्रगतिकारी व्यक्तित्व (सम्पादकीय) | ... | ... | २ |
| ३. | कुमारों…माया को ललकारो | ... | ... | ४ |
| ४. | सच्चा साथी | ... | ... | ७ |
| ५. | धर्म-जीवन को ऊँचा उठाने की आदर्श विधि | ... | ... | ६ |
| ६. | आत्मा के सूक्ष्म आहार | ... | ... | १० |
| ७. | ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा सर्वसुखों की प्राप्ति | ... | ... | १२ |
| ८. | एक वह भी जमाना था | ... | ... | १३ |
| ६. | मानव एकता आध्यात्मिक सम्मेलन का उद्घाटन सम्पन्न | ... | ... | १५ |
| १०. | क्या हम पाप कर्मों की सजा से छूट सकते हैं ? | ... | ... | १७ |
| ११. | दुःख का अब नाम न ले कोई ! (कविता) | ... | ... | २० |
| १२. | अब परमात्मा का अनुभव सहज ही हो सकता है | ... | ... | २१ |
| १३. | सामूहिक राजयोग | ... | ... | २३ |
| १४. | सतयुग और राज्य विस्तार | ... | ... | २५ |
| १५. | शान्ति-गीत | ... | ... | २८ |
| १६. | सेवा समाचार चित्रों में | ... | ... | २६ |
| १७. | आध्यात्मिक सेवा समाचार | ... | ... | ३० |


# सारे विश्व तथा वायुमण्डल में परिवर्तन

इस समय सारे भूमण्डल पर तनाव, खिंचाव और लड़ाई-झगड़े की स्थिति बनी हुई है। भारत के बाहर सेनाएँ लड़ाई के लिए तैयार होकर खड़ी हैं और अन्दर भी घर-घर में झगड़ा है। आज पिता की उपस्थिति में भी बच्चा अपनी जननी पर हाथ उठाते लज्जित नहीं होता। एक ही देश और 'धर्म' के लोग भाषा, धन अथवा अन्न के प्रश्न पर एक-दूसरे के प्रति मनमुटाव, तनाव, विरोध और वमनस्य लिए आघात-प्रत्याघात करते हैं और रक्तपात करने को भी तयार रहते हैं। विश्व-भर में युद्ध का नज़ारा है। सारा भूमण्डल ही कुरुक्षेत्र बना हुआ है। सभी जगह महाभारत लड़ाई के बिगुल बज रहे हैं। एक अजीब कोलाहल मचा हुआ है।

अधर्म और अशान्ति के विनाश की इस वृहद तैयारी के साथ-साथ धर्म और शान्ति की पुन: स्थापना के लिए इधर भारत की अनेकानेक माताएँ और कन्याएँ सहज-राजयोग का अभ्यास कर रही हैं, ब्रह्मचर्यव्रत और पवित्रता-व्रत का पालन कर रही हैं और ईश्वरीय ज्ञान, योग और अहिंसा की शक्ति से सारे विश्व तथा वायु-मण्डल में परिवर्तन लाने का पुरुषार्थ कर रही हैं। वे हर मनष्यात्मा की ज्योति जगाकर सृष्टि में उजाला करने के कार्य में प्रयत्नशील हैं। शीघ्र ही उनके इस पुरुषार्थ के फलस्वरूप सृष्टि में अनेक आसुरी सम्प्रदायों का विनाश और सतयुगी दैवी धर्म की स्थापना होगी।

## सूचना


ज्ञानामृत का वार्षिक शुल्क—१६ रुपये
छमाही शुल्क—८ रुपये
एक प्रति अंक—१.३५
विदेशों के लिए—१०० रुपये

व्यवस्थापक
ज्ञानामृत
बी ६/१६ कृष्णानगर
दिल्ली-५१

# एक स्नेहशील, उत्साहवर्धक, प्रगतिकारी व्यक्तित्व

ब्रह्मा बाबा के साथ जीवन के जो दिन बीते वे जीवन की एक स्वर्ण-निधि से भी अधिक अनमोल होकर रह गये । बाबा के एक-एक दिन के एक-एक कर्त्तव्य की क्या अलौकिक गाथा सुनायें ! सुनाते-सुनाते रोम-रोम पुलकित होने लगता है ।

जिन दिनों की बात हम कह रहे हैं, उन दिनों शुक्रवार और शनिवार—इन दो दिनों को छोड़-कर बाकी सभी दिनों में भोग लगता था । अभी मधुबन में जहाँ डिस्पेंसरी है, उसके पीछे जो बड़ा कमरा है, वहाँ ही भोग लगा करता था । भोग से काफी पहले हम लोग योग में बैठते थे । बाबा कृपा करके मुझे अपने सामने बिठाते थे । कई बार दूसरा कोई मेरे आगे बैठ जाता तो बाबा मुझे बुला कर सामने किसी स्थान पर बिठा देते । तब बाबा की योग दृष्टि पाकर शरीर की सुधबुध न रहती । इस लोक से कहीं दूर, कहीं दूर, प्रकाश में चले जाते और साकार से निराकार स्थिति में पहुँच जाते । तब एक ऐसा आनन्द आता कि जिससे कभी नीचे उतरने को जी न करता । "बस, सुख है तो यही है, जीवन है तो यही है, यह जो प्राप्ति हुई है, उसकी कोई तुलना नहीं"—ऐसी अनुभूति बनी रहती । जैसे लोहे में अग्नि घुस जाती है, वैसे ही प्रकाश, शक्ति, शान्ति, आनन्द एक-रूप होकर आत्मा में ओतप्रोत होते हुए मासूस होते और साथ-साथ वहाँ से एक बहुत बड़े वेग एवं तीव्रता से निकल कर इनके प्रकमपण चहुँ ओर विद्युत की तरह फैलते हुए मालूम होते। दोनों चर्म-चक्षुओं में भी एक नई रूहानी शक्ति आ जाती जिससे पास बैठे शरीरधारियों के शरीर थोड़े-थोड़े ही दिखाई देते परन्तु उनमें से हरेक में अलग-अलग डिग्री का प्रकाश दीख पड़ता ।

परन्तु यहाँ विशेष उल्लेखनीय यह है कि जिस अपार प्यार से ब्रह्मा बाबा भोग लगाते वह दृश्य देखने-जैसा होता । बाबा का मुखाकृति, बाबा के नैन-बैन, सभी प्रेम-प्लावित होते । बाबा की ओर देखने वाले किसी भी वत्स का मन प्रेम से विभोर हो उठता । जैसे बाबा का हृदय प्रेम से झलक रहा हो और उसमें रंच-मात्र भी प्रेम के सिवा उस समय और कुछ न हो—ऐसी भासना आती ; जैसे धौंकनी चलती है और आग भड़कती है, वैसे ही प्रतीत होता कि प्रेम पूरे पैमाने से शिव बाबा को अपनी लपेट में लिये हुए है, अपनी बाहों में समाये हुए है अथवा अपने सीने से लगाये हुए है । उस प्यार की ऐसी बहार होती कि हरेक को प्रभावित करती । सभी का मन प्यार की तीव्र तरंगों में डूब जाता । जैसे बादलों में से बिजली कूँदती है, बाबा के चेहरे के बीच से ऐसे रूहानी रोशनी कूँदती थी । वह रोशनी ऐसी थी कि हरेक के मन में पहुँच कर प्रेम को धधकाती थी । सारे वातावरण में प्रेम का ऐसा प्रबल प्रभाव होता कि कोई नव-आगंतुक एवं तीव्र देहाभिमानी भी उसकी झकझोर से न वच सकता । बहुत थोड़े-से बहन-भाई भोग लगाने बैठे होते थे । प्रायः सभी प्रभु-सर्मपित थे । शिव बाबा पर न्यौछा-वर किये हुए अर्थ से, समर्पित एवं पवित्र योगियों के हाथ से बनाया भोग शिव बाबा के लिये रखा होता । प्रेम सभी के मन में बाढ़ की नदी के पानी की तरह हिलोरें मार रहा होता । स्वयं जगत् पिता-ब्रह्मा और जगत् की माता सरस्वती भोग लगा रहे होते । आहा, हा—रे मन, इससे बढ़कर और क्या दृश्य हो सकता है ! इससे बढ़कर पवित्र भोजन और कहाँ हो सकता है ? इससे अधिक मधुर घड़ी और क्या हो सकती है । वह भोग ही मानो सोमरस था । बाबा अपनी गोद में लेकर थपथपा कर जब भोग खिलाते और मातेश्वरीजी अपनी गोद में लेकर जब मधुर रस पिलातीं तो स्वर्ग इसके सामने हेच लगता था । मन करता था कि इस समय को बाँध कर रख दिया जाय । अरे नेत्रों, तुम धन्य हो कि तुम्हें ऐसे दृश्य देखने को मिले जिनका बखान करते वेद-पुराण नहीं थकते । अहो-अहो, यह जीवन धन्य है कि जिसे ब्रह्मा और

सरस्वती की गोद मिली, शिव बाबा का उन द्वारा दुलार और प्यार मिला !

हमने नर-नारी के प्रेम की गाथाएँ अज्ञान-काल में सुनी थीं। हमने भक्तों द्वारा भगवान् को प्यार करने की कथाएँ भी श्रवण की थीं। परन्तु ज्ञान-युक्त अवस्था में, योग-स्थित होकर सर्व सम्बन्धों का प्यार एक-साथ जोड़कर, ऐसी घनिष्ठता, आत्मीयता, अपनत्व और निकटता से परमात्मा को प्यार करते हुए विश्व की सर्व-श्रेष्ठ आत्माओं को जब देखा तो स्वाभाविक था कि ऐसे दृश्य से तादात्म्य होता और मन में उसकी अपार खुशी होती। आज भी बाबा के उस स्नेहशील व्यक्तित्व की जब याद आती है तो मन गद्‌गद हो उठता है।

बाबा का व्यक्तित्व जैसा स्नेहशील था, वैसा ही उत्साहवर्धक और प्रगतिकारी भी था। इस संदर्भ में उस अवसर की याद हो आती है, जब एक बार माउन्ट आबू में प्रदर्शनी की गयी थी। वहाँ यह पहली प्रदर्शनी थी। जहाँ आजकल आध्यात्मिक संग्रहालय है, पहले वहाँ एक होटल था और उसके मैदान को पहले लेने की कोशिश की गयी परन्तु उसकी बजाय उसके निकट ही एक धर्मशाला में प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। उस प्रदर्शनी को राजस्थान के तत्कालीन राज्यपाल, भ्राता हुकमसिंह जी ने भी देखा, इन्स्पेक्टर जनरल पुलिस ने भी, एस० पी० तथा कलैक्टर ने भी देखा और वहाँ आये हुए यात्रियों तथा वहाँ के नागरिकों ने भी। उस अवसर पर आबू पर्वत पर पहली बार शान्ति यात्रा हुई थी। शोभा यात्रा में हमें जो नारे लगाने थे, वे बाबा से स्वीकृत कराये गये थे। बाबा ने एक-एक नारे के बारे में अपने विचार स्पष्ट किये थे। इस प्रकार हरेक कार्य में बाबा मार्ग प्रदर्शन करते थे और संशोधन देते थे जिससे कि प्रगति होती रहे।

फिर, जब हम सभी शोभा यात्रा से वापस पाण्डव भवन लौटे तो बाबा सभी के स्वागत के लिये खड़े थे। सभी बाबा को सेल्यूट (Salute) कर रहे थे और बाबा भी सेल्यूट से इसका उत्तर दे रहे थे तथा सभी पर पुष्प वर्षा कर रहे थे। उस समय बाबा जिस प्यार और दुलार से सभी का स्वागत कर रहे थे, वह देखते ही बनता था। जैसे किसी मात-पिता के अच्छ बच्चे घर लौट आने पर मात-पिता को बड़ी प्रसन्नता होती है, उसी प्रकार, बाबा भी सेवाधारी (Serviceable) बच्चों को देखकर बहुत प्रसन्न प्रतीत होते। वे सभी को अपने कर-कमलों से टोली देते और अपने शब्द-रत्न से सभी का उत्साह बढ़ाते। इससे सभी की थकावट उतर जाती और कार्य करने के लिये और ज्यादा उमंग तथा उत्साह आता। इस प्रकार, बाबा का व्यक्तित्व जितना स्नेहशील था उतना ही उत्साह-वर्धक और प्रगतिकारी भी था।

—जगदीश

आबू पर्वत पर पहली बार निकाली गई शोभा यात्रा से पाण्डव भवन वापस लौटने पर बच्चों का स्नेहशील बाबा स्वागत करते हुए।

# कुमारो…माया को ललकारो

ब्र० कु० सूरजकुमार, माउण्ट आबू

कुमार जीवन ऐसा निखरता स्वर्ण है, जिस पर यदि विशेषताओं के हीरे जड़ दिये जाएं तो कुमार संसार को चकाचौंध कर देने वाले दृश्य उपस्थित कर सकता है। वास्तव में ही युवा काल मानव की वह सुन्दर बगिया है जिसमें अनेक पुष्प उगाये जा सकते हैं। स्वयं भगवान ने कुमारों की एक विशाल सैना गठित की है। बस आवश्यकता है उन्हें एक नई दिशा की और निर्भीकता की। तो यहाँ हम कुमार व कुमारियों के लिए मन के कुछ उद्‌गार प्रकट करेंगे।

**भगवान के प्यार में पलने वाले कुमार कुमारियों—**

देखो, ये आसुरी सम्पदा नष्ट होने जा रही है। जो कुछ तुम इन आँखों से देख रहे हो वो नहीं रहेगा। सब कुछ विनाशी व दुखदाई है। अतः इन बनावटी चकाचौंध से प्रभावित मत होओ। इसमें कुछ भी नहीं है। कलियुगी प्राप्तियों के पीछे मत भागो…ये मृगतृष्णा है व आत्मा के अविनाशी खज़ानों को नष्ट करने वाली हैं।

दूसरी ओर…इस मधुर ईश्वरीय मिलन में असीम आनन्द है यह उस सागर की तरह है जिसकी गहराई नहीं नापी जा सकती, परन्तु जहाँ हीरे रत्नों के भण्डार हैं। ये प्रभु का प्यार, ये ईश्वरीय मिलन का सुख, ये उसकी अमृतवाणी की मनभाविनी तान फिर कभी देखने को नहीं मिलेगी। दैहिक सुख, भौतिक सुख तो प्रत्येक जन्म में प्राप्त होंगे। अतः इस पवित्र पथ से फिसलना नहीं।

देखो…आसुरी शक्ति तुम्हारे पैरों तले रोंदी जा रही है। तुमने कल्प-कल्प आसुरी शक्तियों का दमन किया है। अब पुनः तुम्हें इस मायावी शक्ति को नष्ट करना है। सोचो, यदि तुम महावीर… महावीरनी…जिनके साथ सर्व समर्थ है, भी माया को चुनौति नहीं दोगे, यदि तुम भी माया से भयभीत होंगे तो माया जीत कौन बनेगा और विश्व को इस मायावी शक्ति से कौन मुक्त करेगा।

विचार करो…तुम कौन हो ? वही अंगद जो इन्द्रिय जीत था। तुम ही इन्द्रिय जीत हो। तुम अपनी शक्तियों को पहचानो। जिस क्षण तुम्हें अपनी शक्तियों का अहसास हो जाएगा तो तुम्हें इस विकारों की शक्ति की सत्यता का भी ज्ञान हो जाएगा, तुम जान जाओगे कि ये तो बनावटी शेर है जो तुम्हें भयभीत कर रहा है। और तुम्हारे एक ही शक्तिशाली संकल्प से ये सदा के लिए विनष्ट हो जाएगा।

इस जीवन में सदा ही अपनी कमजोरियों को नहीं देखते रहो नहीं तो तुम सदा ही रोते रहोगे, सदा ही उदास रहोगे। अपनी अलौकिक प्राप्तियों की ओर नज़र दौड़ाओ। अपनी महानताओं का बार-बार स्मरण करो। तो तुम प्रतिक्षण महानता के शिखर पर चढ़ते जाओगे और कमज़ोरियाँ तुम्हें स्पर्श भी नहीं कर सकेंगी।

ज़रा शान्त चित्त होकर पवित्रता की शक्ति को पहचानो। इस शक्ति के बल पर तुम जो चाहो कर सकते हो। एक आत्मा के पवित्रता के वाइब्रेशन्स को पल भर में समाप्त कर देते हैं। पवित्रता की शक्ति से हर कार्य को सफल किया जा सकता है। इस शक्ति से हर संकल्प को सिद्ध किया जा सकता है। पवित्रता के ऊपर ही ईश्वरीय सुखों की बौछार होती है। पवित्रता की शक्ति की कमी ही अनेक परेशानियाँ पैदा करती हैं। अपने महत्त्व को जानो और महत्त्वशाली बनते जाओ।

तुमने निश्चित ही संसार से विपरीत पथ अपनाया है। अब तुम्हारी दिशा उनसे भिन्न है। तुम उनसे बहुत दूर निकल आये हो, अब मुड़कर उनकी ओर नहीं देखो। उनके रास्ते दुखदाई हैं, ऊपर से सुखद दीखते हैं, परन्तु अन्दर से खाली हैं। अतः इस भोग-विलास के जीवन से सदा के लिए मुख मोड़ लो। अन्तरमन से काम की भूख मिटा दो।

तब तुम हर पल ईश्वरीय सुखों का रसास्वादन करते रहोगे।

अपने जीवन से तेरे-मेरे की दीवारें तोड़ डालो। ये बड़ी ही निम्न कोटी की दीवारें हैं। अब ऊँची स्मृति (Super-consciousness) को जागृत करो। तेरे-मेरे के फेरे में पड़कर समस्त विश्व पीड़ित है, प्रत्येक आत्मा प्यासी है, उनकी भूख अमिट है। परन्तु तुम इस जाल में मत फँसो। इस जाल में फँस कर तुम उड़ नहीं सकोगे। जबकि तुम्हें तो फरिश्तों की तरह उड़ना है।

साथियों, सदा टकराव से बचकर रहो। टकराना तो तुम्हें माया से है, यदि तुम अपनों से ही टकराओगे तो तुम्हें अपना कौन कहेगा? भगवान् के बच्चों को आपस में टकराना क्या शोभा देता है! तुम टकराकर अग्नि पैदा न करो। नहीं तो ये अग्नि तुम्हें ही भस्म करती रहेगी और तुम दूसरों को भस्म होने से नहीं बचा सकोगे। याद रक्खो, आपस में टकराने वाले कभी माया से टक्कर नहीं ले सकेंगे। टकराने वाले ईश्वरीय सुखों के लिए ललचाते ही रह जाएँगे। ऊँचे लक्ष्य को पाना उन्हें एवरेस्ट की चोटी पर चढ़ने जैसा लगेगा। कमज़ोरी उन्हें हर कदम पर हार खिलायेगी।

भगवान् की आँखें तुम पर टिकी हैं। तुम अपनी शक्तियों का प्रयोग नव-निर्माण के दिव्य कार्य में करो। केवल स्वतन्त्र रहना, तुम्हारा लक्ष्य न हो। स्वतन्त्र तो सभी पक्षी हैं परन्तु क्या वे तुमसे श्रेष्ठ हैं। तुम तो विश्व को स्वर्ग बनाने वाले हो। अनेक मनुष्यों की सोई तकदीर तुम्हें जगानी है। उठो और तीव्र गति से कदम बढ़ाओ। तुम्हारे बढ़ते कदम, अनेकों के कदम बढ़ायेगें। पीछे न देखो। पीछे हटने का इरादा त्याग दो।

बन्धुओं···आप इस जीवन में अकेला-पन महसूस करते हो और इसीलिए तुम्हारा झुकाव वैभवों व व्यक्तियों की ओर हो जाता है। परन्तु इस अकेले-पन को आप ईश्वरीय चिन्तन द्वारा व परमपिता के साथ द्वारा दूर करो। जब भी अकेलापन लगे, अपने उस परम मित्र का आह्वान करो तो वह आकर तुम्हारा मन बहला जाएगा।

हमें पता है कि तुम्हें काँटों के जंगल में रहना पड़ता है जहाँ रात-दिन माया की गर्म लू लगती है। तुम्हें उस जगत में रहना पड़ता है, जहाँ चारों ओर माया के तूफ़ान चलते हैं, विषय विकारों की अग्नि जलती है, जहाँ अनेक लोग तुम्हें तुम्हारे लक्ष्य से विचलित करने के लिए आतुर रहते हैं। गोया तुम हर क्षण दुश्मनों से घिरे हो। परन्तु जरा याद करो···तुम्हारा रक्षक कौन है···तुम्हारे सिर पर किसकी छत्रछाया है। हाथ पकड़ कर रक्खो तो तुम्हारी पल भर की दृष्टि इस मायावी प्रकोप को लोप कर देगी।

ज़रा धैर्य धरो···यदि तुम्हें ये जीवन तपस्या का जीवन लगता हो तो विचलित मत होओ। जीवन तप कर ही निखरता है। तुम्हारे गौरव के दिन दूर नहीं। वे दिन दूर नहीं जबकि समस्त विश्व तुम्हारी दिव्यता को स्वीकार करेगा। जब अनेक आत्माएँ तुम्हें देखने को लालायित रहेंगी। जब तुम्हारी अमृतवाणी कोटि-कोटि जन के मन की प्यास बुझायेगी। इसलिए तुम्हारी इस तपस्या का फल बहुत गौरवशाली है। तुम कुछ भी खो नहीं रहे हो, पा रहे हो। पाते चलो···बढ़ते चलो···

**तुम पूर्णतया आत्म निर्भर व निराधार बनो, विश्व के मार्ग प्रदर्शक बनो। तुम विश्व की ज्योति हो···अखण्ड रूप से जगमगाते रहो···माया के तूफानों में अडोल रहो और समस्त विश्व के समक्ष एक ऐसा आदर्श बना दो जो कि आत्माओं के शीश झुक जाएँ।**

बन्धुओ, जब तुम बीमार हो जाते हो तो अकेलेपन के प्रभाव में आकर विचलित हो जाते हो और साथी की तलाश करने लगते हो। परन्तु तुम भूल जाते हो उन करोड़ों मनुष्यों को जिनके जीवन साथी हैं परन्तु वे तुमसे कहीं अधिक परेशान हैं और सोचते हैं कि कितना अच्छा होता जो हम इस गृहस्थ जंजाल से मुक्त होते तब हमें उड़ने से कोई भी न रोक पाता। इसलिए, अपनी स्वस्थिति को श्रेष्ठ बनाओ···विश्व का पालनहार, तुम्हारा साथी है···तुम उसे भूलकर स्वार्थी साथियों की कामना क्यों करते हो। तुम योग-युक्त रहो तो अनुभव करोगे कि समस्त विश्व तुम्हारा साथी है।

लोग कहते हैं कि कुमार बिना ब्रेक की गाडी

होते हैं, परन्तु तुम्हें दिखाना है कि कैसे तुम अपनी जीवन रूपी गाड़ी को लक्ष्य की ओर कर देते हो। परन्तु मार्ग की किसी भी दुर्घटना से बचने के लिए ज़रा धैर्यता से अपनी गाड़ी को हर मोड़ पर मोड़ दो।

अपने जीवन को शक्तिशाली बनाने के लिए इसे कुछ नियमों की तपस्या में बांधो। नियम बड़े बलवान हैं। तुम्हारे स्वयं के नियम तुम्हें बहुत बलवान बनायेंगे और तुम्हारा शक्तिशाली जीवन देखकर माया को तुम्हारे आगे नमन करना पड़ेगा। अपने जीवन में दो बातों की धारणा दृढ़ करो। प्रतिदिन ज्ञान श्रवण व मनन और अमृत वेले से लेकर सारे ही दिन बीच-बीच में योगाभ्यास। केवल सेवा के स्वरूप मत बनो। तुम सब कुछ भूल-कर मात्र सेवाधारी बन जाते हो, इसलिए केवल सेवा तुम्हें बलवान नहीं बना पाती। और तुम्हारे कदम लड़खड़ाने लगते हैं। इसलिए यदि अमर होना चाहते हो तो इस जीवन में ज्ञान व योग का बल भरो।

जीवन में एक बात पर ध्यान दो। हमें दूसरों से प्यार मिले—यह संकल्प समाप्त करो। तुम तो भगवान के प्यार में पलते हो। तुम दाता के बच्चे हो। दूसरों पर प्यार बरसाते चलो परन्तु प्यार देने के साथ ही साथ उपरामता का सन्तुलन भी रक्खो। प्यार देने के बाद उपराम वृत्ति न अपनाने से प्यार माया का स्वरूप बन जाता है। इसलिए सावधानी से काम लो—कहीं भी आसक्त न हो।

साथियों, माया की इस रंग-बिरंगी फुलवारी में कुछ भी सुगन्ध नहीं है। बल्कि ये मन को आक-र्षित करने वाली फुलवारी दुर्गन्ध पूर्ण है। इसमें सच्चा सुख नहीं है। सच्चा सुख तो उसी श्रेष्ठ जीवन में है जो तुमने अपनाया है। इस जीवन को छोड़कर और कहीं जाने के स्वप्न न देखो। इस जीवन में तुम्हारा साथी भगवान है, उसे छोड़कर तुम्हें भला और कहाँ चैन मिलेगी। यदि भगवान की गोद में भी तुम्हें विश्राम न मिला तो शैतान की गोद में आराम की कल्पना क्या मृगतृष्णा समान नहीं है ?

इसलिए अपने पथ पर दृढ़ता से चलो। भग-वान् की छत्रछाया में रहते हुए तुम्हें कोई रोक नहीं सकेगा। तुम ही महावीर हो, एक-एक छलांग में विषय सागर को पार करते चलो और रावण की इस स्वर्ण नगरी को आग लगाकर सदा के लिए नष्ट कर दो। कभी न भूलना "सर्व शक्तिवान की शक्तियाँ तुम्हारे साथ हैं।"

बासवाड़ा में ब्र० कु० भावना विदेश यात्रा से लौटने पर प्रव-चन करती हुई दिखाई दे रही हैं साथ में हरीश भाई हैं।

# सच्चा साथी

**ले०-ब्र० कु० आत्म प्रकाश, आबू**

राम और चन्द्रा अपनी माँ (श्री देवी) से वार्तालाप कर रहे हैं—माँ, सचमुच इस कलियुगी पतित पुरानी दुनिया में कोई किसी का सदा का साथी नहीं। सभी दो दिन के लिए मेहमान बनकर इस मुसाफिरखाने में आते हैं और चले जाते हैं, यही परम्परा आदि-काल से चलती आ रही है।

**चन्द्रा**—माँ, राम की बात तो सही है, लेकिन जिसके पास अथाह धन है वह धन से कोई भी काम करा सकता है, किसी को भी अपना बना सकता है। मेरे विचार से तो धन ही सच्चा साथी है।

**श्रीदेवी**—बेटी, साथी से तो सुख मिलता है। जिन्हों के पास अथाह धन है, उससे सुख तो अवश्य मिलता है परन्तु स्थाई नहीं। वे भी सदा चिन्ता ग्रस्त होकर अशान्त रहते हैं, बेचैन रहते हैं कि कोई चोर आकर हमारा धन न ले जाए। यह भय उनकी नींद भी हराम कर देता है। किसी को चिन्ता रहती है काले धन का आयकर कैसे बचाएं। तो धन सच्चा साथी नहीं है।

**चन्द्रा**—लेकिन माँ, आप कुछ भी कहो, जहां धन है वहाँ सुख चैन के भौतिक साधनों की उपलब्धी होती है, उनके लिए तो स्वर्ग यहाँ ही है।

**श्रीदेवी**—धन तो सदा का साथी नहीं है, हम देखते हैं जो आज अमीर है, वो कल फकीर बन जाते। जो आज राजा है वो कल रंक बन जाते। तो वास्तव में धन विनाशी सुख देता, उसको सच्चा साथी नहीं कह सकते—कहावत है लक्ष्मी चंचल होती है।

**राम**—हाँ, माँ, ये आपकी बात एकदम सच है। मेरे विचार से तो धन सच्चा साथी नहीं, अपने सगे सम्बन्धी ही सच्चे साथी हैं। वे ही अन्त तक हमें साथ देते हैं। सुख-दुख में हमारा साथ देते हैं, समय पर हमारी मदद करते हैं।

**श्रीदेवी**—बेटा, देहधारी भी अल्पकाल के साथी हैं, जब कोई शरीर छोड़ते हैं तो कोई उस के साथ नहीं जाता। देखो, अपनी पड़ोसिन लक्ष्मी माता की क्या हालत है। उसके पास अथाह धन है, चार बड़े बच्चे भी हैं लेकिन सदा उदास रहती है।

**राम**—क्यों क्या बात है जबकि उसके पास अथाह धन सम्पत्ति है, बच्चे भी भगवान ने दिये हैं···

**चन्द्रा**—राम भैय्या, तुम्हें पता नहीं है, उसके चार बच्चे चार ढंग के हैं, उसमें एक भी अच्छा नहीं है। एक शराबी है, दूसरा गुंडों के संग में रहता है, तीसरा एकदम सुस्त आराम पसंद है और चौथा एकदम बुद्धु, जो कि उसे इस दुनिया में कैसा व्यवहार किया जाता है ये भी ज्ञान नहीं है अर्थात् पागल है।

अभी थोड़े दिन पहले की ही बात है, धन के लालच में आपस में लड़कर अपने बाप का ही खून कर दिया। बहुत दिन तक कोर्ट केस से धक्के खाते आ रहे। बताओ भला, ऐसे जीवन में सुखशान्ति कहाँ से मिलेगी। न उसे पति तथा पुत्र का सुख है। कोई जिन्दगी भर साथ नहीं निभाता, सब मतलब के स्वार्थी साथी हैं। कहते हैं न—"मतलब निकल गया, तो पहचानते नहीं।" यही हालत सारी दुनिया की ही है।

**राम**—हाँ बहन, कलियुग में इन विकारों ने हरेक की सुख शान्ति छीन ली है। हर एक के मन में ईर्ष्या द्वेष का बीज डालकर आपस में आग लगा दी है, कोई किसी का नहीं है।

**श्रीदेवी**—नहीं बेटा, ऐसी कोई बात नहीं। भले धन और देहधारी सम्बन्धी हमारे साथी नहीं हैं तो आखिर अच्छे कर्म तो हमारे साथी हैं ही।

**राम**—लेकिन माँ, इस भ्रष्टाचारी दुनिया में श्रेष्ठ कर्म करने का ज्ञान भी कौन दे, चारों ओर भ्रष्टाचार का ही बोलबाला है, सच्चाई है कहाँ ?

**श्रीदेवी**—नहीं राम, कुछ मात्रा में तो सच्चाई है। उस सच्चाई के आधार पर ही ये दुनिया चल रही है, नहीं तो कब से ये दुनिया खत्म हो जाती।

खट खट···खट···खट···

**चन्द्रा**—माँ, दरवाजा कोई खटखटा रहा है, खोलो ज़रा···

**श्रीदेवी**—(दरवाजा खोलते हुए) अरे चन्द्रा ये तो

सुचेता तुम्हारी सहेली आई है तुमसे मिलने ।

**चन्द्रा**—आओ बहन, आओ—बहुत दिनों के बाद दर्शन हुआ । उस दिन भी कहा था कि चलो पिक्चर देखने के लिए, लेकिन पता नहीं रफ्फू चक्कर होकर कहाँ चली गई थी । क्यों, बात क्या है आखिर ये चालचलन बदलने की । सफेद कपड़े भी पहनने लगी ।

**सुचेता**—क्या बताऊँ, कुछ दिनों से मैं ब्रह्माकुमारी आश्रम में जा रही हूँ । वहाँ जाने से मेरे जीवन में एकदम परिवर्तन हुआ । ऐसा लगता है—कि न चाहते हुए भी मुझे कोई अपने तरफ खींच रहा है, वो ही मेरे जीवन का सहारा है जिससे मेरे बेचैन मन को चैन मिलती गई···

**चन्द्रा**—(आश्चर्य से)—वो भला कौन ?

**सुचेता**– वो है निराकार शिव भगवान, सच्चा साथी जो अपनी जीवन रूपी नैय्या का खिवैया बन भव-सागर से पार लगाता है । आज भी जब मैं सवेरे आश्रम पर शिव बाबा के महावाक्य सुनने गई तो पहली पंक्तियां थीं—**जिसका साथी है भगवान, उसको क्या रोकेंगे आंधी और तूफान**···सचमुच बहन, जिस आत्मा को सच्चा साथी मिल जाता उसका इस पुरानी दुनिया से लगाव खत्म हो जाता है । अब तो मेरा संसार ही शिव भगवान हो गया है ।

**चन्द्रा**—इसका मतलब तुम्हें भगवान का साक्षात्कार हो गया···

**सुचेता**—साक्षात्कार ही नहीं, लेकिन साक्षात पर-मात्मा से मेरा मिलन हुआ और हर घड़ी योग साधना से मिलन मनाती भी रहती हूँ ।

**चन्द्रा**—सुचेता, सचमुच तुम्हारे जैसा भाग्यशाली इस जहान में कोई नहीं । लेकिन ये तो बताओ वो हमारा सच्चा साथी कैसे है ?

**सुचेता**—वही परमात्मा है जो कि कभी भी हमारा साथ नहीं छोड़ता । धन भी साथ छोड़ जाता है, मित्र सम्बन्धी भी समय पर किनारा कर लेते हैं और संसार का सब कुछ क्षणिक है । परन्तु जो मनुष्य अपना नाता उस परमपिता से जोड़ लेता है, उसके बुरे दिन समाप्त हो जाते हैं । तो सच्चा मन का मीत वही परमात्मा है ।

**राम**—यही चर्चा अभी हमारी हो रही थी कि सच्चा साथी कौन है ।

**श्रीदेवी**—तुम तो सुचेता, इस छोटी उम्र में ही काफी ज्ञानवान बन गई ।

**सुचेता**—हाँ, माताजी, मेरी यही दिल की तमन्ना थी—कि इस जीवन की सफलता तब ही है, जब इसमें कुछ ऐसा सीखा जाए जो संसार से भिन्न हो ।

**श्रीदेवी** – बड़े ऊँचे विचार हैं बेटी आपके···तुम्हें देखकर मेरा दिल हर्षित हो रहा है ।

**सुचेता**—माता जी, आप सभी भी भगवान को अपना साथी बना लो तो मुझे बहुत खुशी होगी । आज यही कहने मैं आई थी । सचमुच माताजी, भगवान के साथी बनाने में जो परम आनन्द है वह इस संसार में कहीं भी नहीं है । चाहे मनुष्य को कुछ भी मिल जाए, परन्तु फिर भी उसकी भूख मिटती नहीं । लेकिन जब से मैंने भगवान को अपना साथी बनाया, मेरे मन की भूख मिट गई, मुझे इस संसार में कुछ भी पाने की इच्छा नहीं रही ।

**चन्द्रा**—सुचेता, मैं भी आपके साथ आश्रम चलूंगी ।

**राम**—मैं भी ।

**श्रीदेवी**—फिर मैं पीछे क्यों रहूंगी । ○○

---

(पृष्ठ ६ का शेष)

और आन्तरिक होने के कारण इतना गुप्त है कि कोटि-कोटि मनुष्यों में से कोई विरला व्यक्ति ही इसे पहचानता है । परन्तु इसे पहचान कर लाभ उठाने का समय अब ही है वरना फिर कभी नहीं । अतः योगाभिलाषी व्यक्तियों को चाहिए कि इसे पहचान कर, पूर्ण रीति लाभान्वित होने का पुरु-षार्थ करें और धर्म-निष्ठ, कर्म-श्रेष्ठ एवं योग-युक्त होने के लिए ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के किसी केन्द्र से लाभ उठायें ।

# धर्म–जीवन को ऊँचा उठाने की आदर्श विधि

ले०-ब्र० कु० सन्तराम, कानपुर

आजकल लोग 'धर्म' को प्रायः 'विश्वास' या 'श्रद्धा' मात्र ही समझते हैं। वे धर्म को एक ऐसी विधि अथवा ऐसा मार्ग नहीं मानते जिससे कि मनुष्य की धारणा ऊँची होती है और जीवन पवित्र एवं श्रेष्ठ बनता है। इसलिए आज धर्म को मानने वाले लोग केवल धर्म-ग्रन्थों अथवा धर्म-स्थापकों की महानता में श्रद्धा मात्र ही रखते हैं, वे अपने जीवन को उच्च बनाने पर ध्यान नहीं देते।

एक प्रचलित उक्ति है कि 'धर्म ही शक्ति है।' जब हम इस कहावत को आज के मनुष्य-समाज की स्थिति पर घटाते हैं तो ऐसा अनुभव होता है कि कहीं भूल अवश्य है। आज संसार में अनेक धर्म हैं, फिर भी मनुष्य में आत्मिक बल नहीं, उसके कर्मों में वह शक्ति नहीं। वह चाहता एक है, होती दूसरी है। ऐसा अनुभव होता है कि जो अनेक मत हैं, उनमें सैद्धान्तिक कमी भी अवश्य है जिसके परिणामस्वरूप मनुष्य के आचरण में भी त्रुटि है।

वास्तव में धर्म उस विधि अथवा कला का नाम है जिससे मनुष्य को जीवन का पूर्ण ज्ञान मिले और उसका व्यवहार भी उच्च बने और उसके फलस्वरूप उसे सम्पूर्ण एवं स्थायी पवित्रता, सुख एवं शान्ति की प्राप्ति हो। अतः आज धर्म को मानने वाले मनुष्य को अपने दृष्टिकोण को ही बदलना चाहिए। उसे चाहिए कि अनुशासित (Discplined) रूहानी सिपाही के समान अपने मन और इन्द्रियों को निरन्तर दिव्य विवेक के अंकुश में रखे और अन्य व्यक्तियों के प्रति भी सहनशीलता एवं सह-अस्तित्व की भावना रखे। "धर्म ही शक्ति है"—यह कहावत इस प्रकार के अनुशासित जीवन पर ही लागू होती है।

मनुष्य को धार्मिक अथवा आस्तिक व्यक्ति बनाने के लिए समय-समय पर अनेक विचारधारायें प्रचलित हुईं और उन्हें धर्म-ग्रन्थों अथवा शास्त्रों का रूप दे दिया गया। किन्तु इतिहास और अनुभव यह सिद्ध करते हैं कि अनेकों धर्म-ग्रन्थों और शास्त्रों के निरन्तर बढ़ते रहने पर भी मनुष्य में पवित्रता, सात्त्विकता, व्यवहार की उच्चता प्रायः लुप्त ही होती आई हैं। मनुष्य में आज दिव्य गुणों की जगह आसुरी गुण ही हैं। मनुष्य में दिनोंदिन पशुओं से भी अधिक पाशविक वृत्तियाँ उत्पन्न होती जाती हैं। वास्तव में श्रीमद्‌भगवद्‌गीता में वर्णित 'धर्म-ग्लानि' ऐसी स्थिति ही का नाम है।

वास्तव में ऐसी ही धर्म-ग्लानि के समय गीता के अव्यक्तमूर्त्त परमपिता परमात्मा शिव सहज ज्ञान और सहज राजयोग की शिक्षा देने के लिए प्रजापिता ब्रह्मा के रथ का आधार लेते हैं और अपना, सृष्टि-चक्र के आदि-मध्य-अन्त का तथा समय का वास्तविक परिचय देते हैं। इस प्रकार वह मनुष्य को देवता बनाने का महान् कार्य प्रत्येक ५००० वर्ष गे बाद करते हैं और अब हूबहू ५००० वर्ष पहले की तरह कर रहे हैं।

परमपिता परमात्मा जो ज्ञान और योग सिखलाते हैं, वह बहुत सरल और मधुर होता है। इससे पुरुषार्थी के विचार और व्यवहार में आन्तरिक परिवर्तन होता है तथा उसको विकारों पर विजय प्राप्त होती है। वह स्वयं को पवित्र एवं योग-निष्ठ बनाने के पुरुषार्थ के साथ-साथ दूसरों को भी पवित्रता तथा सहज योग का परिचय देने की सेवा में स्नेह, नम्रता और सद्‌भावना पूर्ण रीति से जुट जाता है। परमपिता परमात्मा के इस कर्त्तव्य के फलस्वरूप इस सृष्टि में दैवी स्वभाव वाले मनुष्य अर्थात् साकार देवता स्पष्ट दिखाई देने लगते हैं। इस विषय में सबसे आश्चर्यजनक परन्तु सत्य बात यह है कि परमपिता परमात्मा शिव का यह दिव्य और अलौकिक कार्य अब चल रहा है। अब ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा गुप्त रीति दानव अर्थात् आसुरी संस्कारों वाले नर-नारी देवी-देवता बने रहे हैं। परन्तु यह कार्य आध्यात्मिक

(शेष पृष्ठ ८ पर)

# आत्मा के सूक्ष्म आहार

ब्र० कु० जगरूप, कृष्णानगर, दिल्ली

आज अधिकांश नर-नारी शारीरिक आहार की शुद्धता और पौष्टिकता पर तो ध्यान रखते हैं लेकिन आत्मिक आहार की कोई चिन्ता नहीं करते। जैसे शरीर को हृष्ट-पुष्ट रखने के लिए सात्त्विक स्थूल आहार की आवश्यकता है वैसे ही आत्मा को स्वस्थ रखने के लिये सात्त्विक, सूक्ष्म आहार की आवश्यकता है। उन्हें पता ही नहीं कि आत्मा का आहार क्या है, कौन-सा आहार सात्त्विक है तथा कौन-सा तामसिक ? अज्ञानता के कारण आज प्रायः सर्व आत्मायें तामसिक आहार ग्रहण करती जा रही हैं। इसका घातक परिणाम हमारे समक्ष दिनोंदिन बढ़ती हिंसा, अराजकता, छल, कपट, पापाचार, भ्रष्टाचार तथा दुःख-अशान्ति के रूप में विद्यमान है।

## आत्मा के सूक्ष्म आहार और उनका अन्तर्मन पर प्रभाव

आत्मा सूक्ष्म है। अतः उसका आहार भी सूक्ष्म है। काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार, ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, छल, कपट, पाखण्ड, चिन्ता, प्रभृति आत्मा के तामसिक भोजन हैं और प्रेम, दया, करुणा, क्षमा, मैत्री, सहानुभूति, त्याग, सेवा आदि सात्त्विक भोजन। अब आप स्वतः सोच सकते हैं कि आपका आत्मिक आहार सात्त्विक है या तामसिक। क्या आप काम-वासना से पीड़ित होकर सन्तप्त तो नहीं रहते ? क्या आप क्रोध की अग्नि में निरन्तर अपने को जला कर शक्तिहीन तो नहीं वनाते रहते ? क्या ऐसा तो नहीं है कि जब कोई मनुष्य आप का नुकसान करता है तो आप स्वयं भी क्रोध में जलने लगते हैं ? एक तो किसी ने आपका नुकसान किया और, दूसरे, आप उसके प्रतिकार में क्रोध में जल कर अपना और नुकसान कर रहे हैं। कितनी महान् अज्ञानता और घोर मूर्खता है यह !!

जब हम किसी को दुःख देने का विचार मन में लाते हैं तो सर्वप्रथम द्वेष, चिन्ता और भय से स्वयं दुःखी होते हैं। साथ ही हमारा अन्तर्मन अपने प्रति वही भाव पैदा कर लेता है। दूसरों से द्वेष का व्यवहार करने वाला व्यक्ति आत्म-द्वेषी बन जाता है। दूसरों को भयभीत रखने वाला व्यक्ति अकारण भय का रोगी बन जाता है। दूसरों को धोखा देने में अभ्यस्त व्यक्ति का अन्तर्मन स्वयं उसका विश्वास नहीं करता। मनोविज्ञान का यह सिद्धान्त है कि मनुष्य की विनाशक मानसिक प्रवृत्तियाँ अन्तोगत्वा उसके लिये भी विनाशकारी बन जाती हैं। दूसरों के प्रति बुरी भावना मन में लाने से वैसी ही भावना अपने आप के प्रति हो जाती है। परघात की मनोवृत्ति अन्ततः आत्मघात की मनोवृत्ति में परिणत हो जाती है। जो दूसरों के लिये साँप-बिच्छु पालता है वह स्वयं उन्हीं के द्वारा डसा जाता है। दूसरों को कष्ट देने वाले व्यक्तियों को असाध्य मानसिक और शारीरिक रोग हो जाते हैं। बहुत-से शारीरिक रोग मानसिक रोग के रूपान्तरण हैं और उन्हीं को होते हैं जिनकी आत्मा पाप के बोझ से लदी है और जिन्हें किसी प्रकार का बाहरी दण्ड नहीं मिला। पापी सदा मानसिक बेचैनी की अवस्था में रहता है जिससे उसे मानसिक और शारीरिक रोग हो जाते हैं। यह पाप का प्राकृतिक प्रायश्चित्त है। इससे बच जाने पर मनुष्य अज्ञात प्रेरणा से प्रेरित होकर अपराध करने लगता है। जो प्रेरणा अपराध उत्पन्न करती है, वही उन भूलों को भी कराती है जो अपराधी के पकड़े जाने का कारण बनते हैं। इस प्रकार आत्मा अपने पापों के लिये स्वयं को दण्ड देती है।

घृणा आत्मा के लिये विष है। दूसरों के प्रति घृणा अन्तोगत्वा अपने प्रति घृणा में परिवर्त्तित हो जाती है। दूसरों को पीड़ा देने की इच्छा अपने को पीड़ा देने की इच्छा बन जाती है। मनुष्य की कलुषित भावनायें कालान्तर में रोग के रूप में बाहर आ जाती हैं। रोग के द्वारा आत्मा को यंत्रणा मिलती है और विकार बाहर निकलते

हैं। अपने-आप से घृणा करने वाला व्यक्ति घोर मानसिक यंत्रणा भोगता है। आत्मभर्त्सना के कारण जो असह्य पीड़ा होती है वह शारीरिक पीड़ा में बदल जाती है। वस्तुत: रोग आन्तरिक मन द्वारा चाहे जाते हैं और उनकी उत्पत्ति आत्म-शान्ति के हेतु होती है। प्रवल मानसिक क्षोभ को आत्मा सहन नहीं कर पाती। अत: उसे मिटाने के लिये बीमारियों की उत्पत्ति होती है। मनुष्य के सभी मानसिक रोग आत्मा को दण्ड के रूप में मिलते हैं।

## अच्छी और बुरी कल्पनाएँ

आत्मिक वल वढ़ाने के लिये यह अत्यावश्यक है कि हम विकारों से अपने को बचावें। हम बुरे कार्य को संसार से छिपा सकते हैं पर अपने-आप से नहीं। बुरे कार्य के फलस्वरूप मन निर्वल हो जाता है। निर्बल मन की कल्पनायें हमारी इच्छाओं के प्रतिकूल होने लगती हैं। इस प्रकार आत्मा अपने आप को दुष्कृत्यों के लिये दण्ड देती है। शुभ कार्य करने से मनुष्य में शुभ कल्पनायें उठती हैं जो उसे आगे बढ़ाती रहती हैं। इस प्रकार पुण्य अपने आप मनुष्य के कल्याण में फलित होता है। दुर्बल मन की कल्पना उसके समक्ष वीभत्स चित्र खड़ा करती है। मनुष्य कल्पना करने लगता है कि उसका रोग बढ़ेगा तो रोग बढ़ता ही रहता है। पुण्यात्मा की कल्पनाएं आशावादी होती हैं। पापात्मा भीतरी मन से दण्ड के रूप में रोग को रखना चाहता है। भीतरी मन की यह इच्छा वीभत्स कल्पना के रूप में प्रकाशित होती है। रोगी अपनी कल्पना में रोग को बढ़ते देखता है। रोग को वह आन्तरिक मन से आह्वान करता है। रोग रोगी को नहीं पकड़े रहता, वरन् रोगी ही रोग को पकड़े रहता है। रोगी की कल्पना ही रोगों का कारण वन जाती है। इसी प्रकार दुर्घटनाओं को निरन्तर मन में चित्रित करने वाला व्यक्ति दुर्घटनाओं को बुला लेता है। ये सब दुष्कृत्यों के लिए दण्ड देने की आन्तरिक मन की इच्छा का परिणाम है।

## आत्मा का विषैला भोजन

पाखण्ड और धोखाधड़ी आत्मा के लिये विषले भोजन के तुल्य हैं। साधारणत: जो व्यक्ति किसी को धोखा देकर अपना काम निकाल लेता है उसे लोग चतुर समझते हैं। लेकिन जो व्यक्ति जितना चतुर होता है उतना संशयात्मक मनोवृत्तिका होता है। उसे किसी की सच्चाई पर विश्वास नहीं रहता। कुछ समय में वह अपने आप में भी विश्वास खो देता है। उसमें सदा अशुभ कल्पनायें उठती रहती हैं जो उसके जीवन को नारकीय बना देती हैं। ऐसे व्यक्तियों में कोई शुभ भावना ठहर नहीं पाती। उनका अपने कल्याण में भी विश्वास नहीं होता। उनमें सदा आत्म-त्रास की भावना रहती है। उन्हें अकारण भय लगा रहता है। उनका आन्तरिक जीवन अत्यन्त वीभत्स होता है। उनकी मानसिक वीभत्सता शारीरिक वीभत्सता के रूप में फूट निकलती है। उनकी आत्मा रोग का आह्वान करने लगती है। ये रोग उनके आत्मिक सन्ताप को घटाते हैं।

स्पष्टत: विकार आत्मा के लिये तामसिक भोजन है। इनके वशीभूत होने पर आत्मा चिन्ता, सन्ताप, भय, संशय और त्रास से भर जाती है तथा जीवन नारकीय वन जाता है। इसके विपरीत प्रेम, क्षमा, दया, मैत्री, सेवा, त्याग सात्त्विक भोजन हैं जिससे आत्मा आनन्द तथा शान्ति से परिपूर्ण हो जाती है और उसमें निश्चय, दृढ़ता तथा विश्वास उत्पन्न होता है। पुण्यात्मा का मन सदा संशय-विहीन रहता है। अत: उसके संकल्प अमोघ होते हैं तथा वे अवश्य सिद्ध होते हैं।

आत्मा का सर्वोत्तम भोजन परमपिता परमात्मा शिव की प्रेमपूर्ण पावन स्मृति है। इससे आत्मा को दुर्बल बनाने वाले विकार, संशय तथा भय का नाश हो जाता है। तथा आत्मा शक्ति-सम्पन्न वन जाती है। परमात्मा शिव सर्वशक्तिमान् हैं क्योंकि वे दैवी गुणों के भण्डार हैं। उनसे सहज सम्बन्ध स्थापित हो जाने पर आत्मा भी गुणवान् और शक्ति-वान वन जाती है।

## त्याग और सेवा

त्याग और सेवा से आत्मा को सच्ची सन्तुष्टि तथा आनन्द की प्राप्ति होती है। त्याग के आनन्द

(शेष पृष्ठ १४ पर)

# ईश्वरीय ज्ञान और सहज राजयोग द्वारा सर्व सुखों की प्राप्ति

सभी विद्याएं सुख की प्राप्ति के लिए ही अध्ययन की जाती हैं। सभी प्रयत्न और परुषार्थ भी सुख ही की प्राप्ति के लिए किए जाते हैं। परन्तु सभी लौकिक विद्याओं तथा सभी प्रकार के लौकिक पुरुषार्थ से एकांगी और अल्प-स्थायी ही सुख प्राप्त होता है। किसी भी लौकिक विद्या अथवा प्रयत्न से मनुष्य के सभी मनोरथ सदा के लिए सिद्ध नहीं होते और उसे सब प्रकार के दुःखों से सदा के लिए निवृत्ति प्राप्त नहीं होती क्योंकि वे दुःख को मूल ही से नहीं काटते और सुख के वृक्ष की जड़ को पानी नहीं देते बल्कि पत्ते-पत्ते को पानी देते हैं।

प्रश्न उठता है कि वह कौन-सी विद्या और कौन-सा पुरुषार्थ है जिससे मनुष्य को सदा के लिये सम्पूर्ण सुख और शान्ति की प्राप्ति हो सकती है? हम निजी अनुभव के आधार पर कह सकते हैं कि ईश्वरीय ज्ञान ही ऐसी विद्या है और सहज ईश्वरीय योग ही ऐसा पुरुषार्थ है जिससे मनुष्य को ये सभी प्राप्तियाँ होती हैं। आज मनुष्य अनेक लौकिक विद्याओं का ज्ञाता तो है परन्तु अफ़सोस है कि वह स्वयं को नहीं जानता। वह निज स्वरूप को भूलकर स्वयं को देह माने हुए है!! इतना ही नहीं बल्कि वह आत्मा के बारे में तथा आत्मा के अविनाशी पिता परमात्मा के बारे में जानने की चेष्टा ही नहीं करता! वह कहता है कि "आज संसार में और बहुत-सी ऐसी बातें हैं जिन्हें जानने का प्रयत्न करना चाहिए; मैं आत्मा हूँ या शरीर हूँ, इस झमेले में पड़ने की क्या आवश्यकता है? मैं कुछ भी हूँ, मुझे अपना कर्त्तव्य करते चलना चाहिए।"

**परन्तु वास्तव में यह विचार ग़लत है क्योंकि स्वयं को जाने बिना तो कर्त्तव्य भी निर्धारित नहीं हो सकता। यदि 'मैं' शब्द देह का वाचक है तो हमारा कर्त्तव्य भी देह तक के जीवन को ही जीवन मानकर इसी जीवन तक सीमित रहेगा और यदि "मैं" शब्द आत्मा का वाचक है तो हमारे पुरुषार्थ का क्षेत्र भी विकृत हो जाएगा। इसके अतिरिक्त मनुष्य का जैसा निश्चय होता है, वैसा ही उसका कर्म होता है। अतः स्वयं को देह निश्चय करने वाले के कर्मों में तथा स्वयं को आत्मा निश्चय करने वाले अर्थात् दोनों व्यक्तियों के कर्मों में अन्तर अवश्य ही होगा!**

गम्भीर विचार के बाद आप इसी निर्णय पर पहुँचेंगे कि स्वयं को देह निश्चय करने से ही सभी दुःख पैदा होते हैं। देह-अभिमान से ही आत्मा को 'स्त्रीपन' अथवा 'पुरुषपन' का भान होता है और दूसरे के देह के प्रति आकर्षण होता है और उससे काम वासना उत्पन्न होती है तथा सुखों के मूल ब्रह्मचर्य का नाश होता है। फिर जब कामवासना के वशीभूत मनुष्य बाल-बच्चे पैदा करता है तो उनमें तथा स्त्री में उसका मोह और उसकी ममता हो जाती है और उनकी अनेक प्रकार की कामनाओं को पूर्ण करने के लिए लोभ करता है तथा भ्रष्टाचारी बनता है और फिर उसका अहंकार भी बढ़ता है। वह कहता है—"मैं बजुर्ग हूँ, मैं इतने बच्चों का बाप हूँ, मैं इतनी सम्पत्ति वाला हूँ," आदि-आदि। और, जब उसकी कामनाएँ पूर्ण नहीं होतीं और उसके अहंकार को ठेस लगती है तब उसे क्रोध भी आता है। इस प्रकार, जो व्यक्ति स्वयं को देह मानने के कारण काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार आदि विकारों से युक्त कर्म करता है, उसे अपने विकर्मों के फल-स्वरूप दुःख भोगना पड़ता है।

अतः स्पष्ट है कि यदि हम सदा के लिए सम्पूर्ण पवित्रता, सुख और शान्ति प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें प्रेक्टीकल रूप में चलते-फिरते, उठते-बैठते, हरेक कर्म करते हुए इसी निश्चय में रहना चाहिए कि—"मैं तो परमपिता परमात्मा

(शेष पृष्ठ १४ पर)

# एक वह भी जमाना था

ले०-ब्र० कु० चक्रधारी, शक्ति नगर, दिल्ली

एक गाँव में एक बच्चा एक बहुत छोटी-सी दुकान लगाए हुए था जिसमें दियासलाई की डिब्बीयाँ अर्थात् माचिस मोमबत्तियाँ, बच्चों के लिए टिकिया, चने, मुरमुरे आदि छोटी-मोटी चीजें बिकती थीं। बच्चा भोला-भाला और सीधा-सादा था और हर ग्राहक से इज़्ज़त से बात करता था। इसलिए लोग भी उसे प्यार की निगाह से देखते थे। थोड़ा-बहुत समान बेचकर वह अपने व अपनी माताजी तथा भाई बहन के लिए गुज़ारे का साधन जुटा लिया करता था।

एक दिन एक सेठ जी उसकी दुकान के आगे से गुज़रे और उन्होंने उस बच्चे से माचिस की एक डिब्बी खरीदी और आगे बढ़ गए। वे अपनी बग्घी में सवार थे और देखते ही देखते उनकी बग्घी बहुत दूर निकल गई।

दूसरे दिन फिर सेठ जी उस बग्घी में सवार होकर उस दुकान के आगे से गुज़रे परन्तु जब तक उस बच्चे की निगाह सेठ जी पर पड़ती तब तक उनकी बग्घी आगे निकल गई। लेकिन फासले का ख़्याल न करते हुए बच्चा बड़ी तेज़ी से उस बग्घी के पीछे भागा और ज़ोर-ज़ोर से आवाज़ें लगाने लगा—"बग्घी रोको", "सेठ जी रुकिये", "सेठ जी, बग्घी रोकिये", "रुको, रुको"!

बच्चे की आवाज़ सेठ जी के कानों में पड़ी और उन्होंने बग्घी रुकवा दी। वे हैरान थे कि यह बच्चा उनकी बग्घी के पीछे क्यों भागा आ रहा है। जब बच्चा नजदीक पहुँचा तो उन्होंने कहा—"बोलो बच्चे, क्या बात है? क्या चाहते हो?" सेठ जी ने पहचान लिया कि यह वही दुकान वाला बच्चा है जिससे कल माचिस ली थी। यह किसी कष्ट में होगा और शायद कोई मदद चाहता होगा—उन्होंने सोचा।

बच्चा हाँफ रहा था और हाँफते-हाँफते टूटे-टूटे वाक्यों में कहने लगा—सेठ जी, सेठ जी, यह लो अपनी अठन्नी।

सेठ जी हैरान थे कि यह बच्चा इतनी दूर से भागकर कैसी अठन्नी देने आया है। इसलिए उन्होंने पूछा—"कैसी अठन्नी?"

बच्चे ने उत्तर दिया—"सेठ जी, कल आपने माचिस ली थी न।"

**सेठ जी**—"हाँ, ली तो थी। उसके पैसे तो दिये थे।"

**बच्चा**—"जी हाँ, आपने एक पैसे की बजाय अठन्नी दे दी थी। कुछ अन्धेरा था, इसलिए देखा मैंने भी नहीं। बाद में जब मैंने देखा तो आप जा चुके थे। आज जब आप आगे से निकल कर गए तो मुझे ख़्याल आया कि आपके पैसे आपको लौटा दिये जाएँ। इसलिए यह लीजिए अपनी अठन्नी और इसकी बजाय मुझे माचिस की कीमत एक पैसा दे दीजिए।"

**सेठ जी**—"कोई बात नहीं, कोई बात नहीं, रहने दो।"

**बच्चा**—"नहीं, नहीं, यह अठन्नी आपकी है, आप ही इसे लीजिए। मैं तो अपनी कमाई के पैसे अपने पास रखता हूँ।"

**सेठ जी**—"बच्चे, यह तुमने कोई चोरी थोड़े ही की है। मैं अपनी खुशी से ही इसे दे रहा हूँ।"

**बच्चा**—"परन्तु दूसरे की क़माई—मेरे लिए वह भी चोरी के बराबर है। उस पर मेरा कोई हक नहीं। मुझे पिताजी ने कहा था कि अपनी

कमाई चाहे थोड़ी हो, उसमें ही बरकत होती है। इसलिए आप इसे वापस ले लीजिए और मुझ माचिस का केवल एक पैसा दे दीजिए।"

सेठ जी बच्चे की ऐसी मीठी-मीठी बातें सुनकर बड़े आश्चर्यान्वित हुए। वे सोचने लगे कि बच्चा तो छोटा है परन्तु बात बड़ी ऊँची और ठीक कहता है। वास्तव में यह मेरे लिए नसीहत है। मैं जो उल्टे कामों से पैसा इकट्ठा करता हूँ, अब उस आदत को छोड़ दूँगा।

तो बच्चो, एक ज़माना ऐसा भी था कि किसी के पास भूल चूक से किसी के अधिक पैसे आ जाएँ तो भी वह उन्हें वापस कर देता था। दूसरे के आग्रह करने पर भी वह उसे यह कहता था कि यह उसकी कमाई नहीं है, इस पर उसका कोई अधिकार नहीं है, इसलिए वह उसे अपने पास नहीं रखेगा। परन्तु अब ज़माना ही बदल गया है। लेकिन हाँ, अब शिव बाबा उस युग की स्थापना कर रहे हैं जिसे सतयुग कहते हैं। उस युग में सब लोग नैतिकता का पालन करते हैं। अतः अब हमें दिव्य गुणों को धारण करना चाहिए।

(पृष्ठ ११ का शेष) आत्मा के सूक्ष्म आहार

की अनुभूति तो सभी अपने जीवन में करते हैं। अपने लौकिक सम्बन्धियों के लिये बड़े से बड़ा त्याग करने में तथा कष्ट सहने में मनुष्य को सुख का अनुभव होता है। यदि हद का यह त्याग बेहद के लिये हो जाय तो मनुष्य को बेहद के आनन्द की प्राप्ति हो सकती है। जिसने परमपिता परमात्मा तथा उनके ईश्वरीय कार्य के लिये अपना सर्वस्व न्योछावर कर दिया; उसके आनन्द की क्या सीमा हो सकती है? वस्तुतः सेवा से हमारी तामसिक वृत्तियों का उदात्तीकरण हो जाता है। बिना दूसरे की आध्यात्मिक सेवा किये हमारी आध्यात्मिक उन्नति नहीं हो सकती। जो लोग दूसरों की इच्छा को तृप्त करने में अपने को लगा देते हैं, उनकी स्वयं की इच्छा स्वतः ही तृप्त हो जाती है।

### प्रेम रूप आत्मिक आहार

प्रेम ऐसा पौष्टिक आत्मिक आहार है जो आत्मा की सारी जटिलताओं, कुसंस्कारों और ग्रन्थियों को समाप्त कर देता है। प्रेम परिपूर्ण हृदय से आनन्द का अजस्र स्रोत प्रवाहित होता रहता है जो दूसरी आत्माओं को भी प्रेममय और आनन्दमय बना देता है। भौतिक विज्ञान का एक नियम है कि प्रत्येक क्रिया की बराबर परन्तु प्रतिकूल दिशा में प्रतिक्रिया होती है। यह नियम आध्यात्मिक क्षेत्र में भी पूर्णरूपेण लागू होता है। जितना हम दूसरों को प्रेम देते हैं उतना ही प्रेम हमें दूसरों से भी प्राप्त होता है। परमात्मा प्रेम के सागर हैं, अतः आनन्द के सागर हैं और सर्वआत्मायें उनसे प्रेम करती हैं। वे आत्मायें धन्य हैं जो ईर्ष्या, द्वेष, घृणा, वैमनस्य का त्याग कर परमपिता परमात्मा और सर्व आत्माओं से निष्कपट तथा निःस्वार्थ प्रेम करती हैं क्योंकि बदले में उन्हें परमपिता परमात्मा का और सर्व आत्माओं का प्रेम तथा सहयोग प्राप्त हो जाता है।

○○

(पृष्ठ २२ का शेष)

रखा हो कि शायद वह है ही नहीं, उसे इतना सहज मिलता देखकर वह उसकी सच्चाई पर भी सन्देह करेंगे और उसे कोई बनावटी चीज़ मानकर दूर हट जायेंगे। अतः अब इन पंक्तियों को पढ़ने वाले व्यक्ति किस ओर झुकते हैं यह उन पर निर्भर है! परन्तु हम यह शुभ सूचना देना अपना कर्त्तव्य समझते हैं कि अब परमपिता परमात्मा का अनुभव सहज ही हो सकता है।

(पृष्ठ १२ का शेष)

की अविनाशी सन्तान हूँ। मैं एक ज्योतिर्मय बिन्दु रूप आत्मा हूँ," आदि-आदि। जब तक आत्मा के बारे में तथा परमप्रिय परमपिता परमात्मा के बारे में पूर्ण रीति ज्ञान प्राप्त नहीं करेंगे (जो ज्ञान अब ज्ञान के सागर परमपिता परमात्मा शिव दे रहे हैं) और देह-अभिमान को छोड़, आत्मा-निश्चय तथा परमात्मा की स्मृति में नहीं टिकेंगे तब तक हमारे जीवन में पवित्रता तथा सच्ची शान्ति का अनुभव कभी नहीं होगा।

# मानव एकता आध्यात्मिक सम्मेलन का उद्घाटन सम्पन्न

इन्दौर १९ मई ८४ प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा आयोजित मानव एकता आध्यात्मिक सम्मेलन के अध्यक्ष भारत के भूतपूर्व उपराष्ट्र-पति माननीय बी० डी० जत्ती ने कहा कि, आज चारों तरफ व्यक्ति-गत राष्ट्रीय, एवं अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर होने वाली घटनाओं को पैनी नजर से देखें। कोई भी अखबार या कोई भी दिवस मानव स्थिति का दिग्दर्शन कराता है, बशर्ते कि आपका हृदय मानव चिल्लाहट के प्रति सहानुभूति रखता हो। मानव द्वारा सर्व आविष्कारों, नवीन प्राप्तियों एवं प्रकृति पर विजय के

इन्दौर में नवनिर्मित मध्यप्रदेश के क्षेत्रीय मुख्यालय 'ओम शान्ति भवन' का उद्घाटन दादी प्रकाशमणि जी तथा दादी जानकी जी द्वारा सम्पन्न हुआ।

बावजूद उसकी विपदाएँ बढ़ती जा रही हैं। मानव चाँद पर उतर गया है, इस शताब्दी में शायद वैज्ञानिक उपलब्धियों का शिखर कायम होगा लेकिन मानव मूल्यों का ह्रास हो चुका है। हमारे चारों ओर क्या घटनाएँ हो रही है वह हम देखें—अपराधों में वृद्धि, मनुष्य द्वारा मनुष्य का एवं एक राष्ट्र द्वारा अनेक राष्ट्रों के शोषण में वृद्धि, धर्म एवं राज-नैतिक विचारधाराओं के नाम पर युद्ध आदि।

आगे आपने इन सभी समस्याओं का त्वरित समाधान बतलाते हुए कहा कि पूर्वी दर्शन बताते हैं कि एक आत्मा है जो कि स्पष्टतया गोचर है। आत्मा का साधारण अर्थ होता है जो शरीर को संचालित करे। इस अर्थ में समाविष्ट है कि, शरीर जड़ है। इसमें यह भी समाविष्ट है कि यदि आत्मा मुझे, आपको, एक अमेरिकन को या एक रूसी को संचालित करती है तो वह सामान्य तत्व अर्थात आत्मा एक ही होना चाहिये। उपरोक्त अर्थ में यह भी समा-विष्ट है कि यदि हम सभी (बिना जातिभेद, रंग-भेद या लिंग भेद के) अपने संचालन के लिए एक ही उद्योग से सम्ब-न्धित है तो फिर हमारे राष्ट्रभेद या रंगभेद के बावजूद हम सभी समान हैं, बराबर है और भाई-भाई हैं।

एक बार यदि मनुष्य का हृदय इस एकत्व की धारणाओं पर दृढ़ हो जावे तो एक वास्तविक विश्व बंधुत्व की भावना—न केवल आर्थिक, सामाजिक या वैचारिक बल्कि समस्त मानव जाति की सुन्दर वास्तविक एकता या कहें समस्त जिवों कि सुन्दर एकता हो। यह सुन्दरता स्वर्ग की सुन्दरता के समान ही होगी।

मध्यप्रदेश विधान सभा अध्यक्ष माननीय रामकिशोर शुक्ल ने दीप प्रज्वलित कर सम्मेलन का उद्घाटन किया एवं अपने उद्घाटन भाषण में आपने कहा कि, आज का मानव मूल भूत एकता का महत्व भूल गये हैं। मानव का सब लोगों के सुख के लिए कर्म करना यही तो धर्म है। कर्म अनादि है, कर्म का सिद्धांत भाग्यवादी नहीं लेकिन सुधारवादी है। हर व्यक्ति गाँधी और बौद्ध नहीं बन सकता लेकिन उनके द्वारा बताये हुए सद्गुणों को धारण कर सकता है। ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय मानव एकता का कठिन कार्य कर रहा है। हम सभी को इनके इस कार्य में सहयोग करना चाहिये। सम्मेलन के मुख्य अतिथि म० प्र० उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश जी० एल० ओझा जी ने कहा कि, हम देख रहे हैं कि, एक ही खुदा के बन्दे हैं। ईरान और ईराक में रहते हुए सतत युद्ध में रहते हैं। यदि ईरान और ईराक आपस में लड़ते हैं तो एक ही तरह का खून बहता है। ईरानी हो या ईराकी हो लेकिन इंसान हैं। यह भौतिक सत्य सामने दिखता है। इस भौतिक सत्य को भी हम समझने को तैयार नहीं हैं। हर इंसान परमात्मा की ही सन्तान आत्मा है। यह तभी सम्भव है जब परमात्मा ही हमें सद्बुद्धि देवे। यह समझ आने पर कोई भेदभाव नहीं रहेगा।

योगशक्ति ब्रह्माकुमारी प्रकाशमणी दादीजी मुख्य प्रशासिका आबू पर्वत ने मध्यप्रदेश एवं भारत के अनेक नगरों से आये हुए प्रतिनिधियों एवं इन्दौर नगर की जनता को अपना आशीर्वाद प्रदान करते हुये कहा कि हम सब यह शुभ संकल्प लें कि हम एक आत्मा को जानेंगे जो इस रथ पर रथी है। वृत्ति में भावना रहे कि हम सब आत्माएँ एक परमपिता परमात्मा की सन्तान आपस में भाई-भाई हैं। इसी शुभ भावना से आप सभी की सर्व कामनाएँ पूरी होंगी। मानवता में एकता लाना है उसका लक्ष्य एक पिता को जानना और उसके साथ अपना सम्बन्ध जोड़ना अर्थात राजयोगी जीवन को अपनाना है, तभी मानव एकता सहज ही स्थापित हो जावेगी।

सम्मेलन को संस्था की सहमुख्य प्रशासिका जानकी जी, भारत में ग्याना के उच्चायुक्त भ्राता स्टीव नारायण जी, देहली से ज्ञानामृत एवं वर्ल्ड रिन्यूअल के प्रधान सम्पादक ब्रह्माकुमार जगदीशचन्द्र जी, देहली से ब्रह्माकुमारी चक्रधारीजी ने भी सम्बोधित किया। म० प्र० क्षेत्रीय निदेशक ब्रह्माकुमार ओमप्रकाश जी ने सर्व का स्वागत किया। मध्य में ब्रह्माकुमारी मोहिनी, आबू पर्वत ने सामूहिक योगाभ्यास कराया। बम्बई की ब्रह्माकुमारी उषा जी ने कार्यक्रम का संचालन किया। भ्राता विमल मित्तल ने धन्यवाद दिया। सम्मेलन का शुभारम्भ मध्य प्रदेश के विभिन्न नगरों से आयी हुई बालिकाओं के नृत्य से हुआ। तथा अन्त में सांस्कृतिक कार्यक्रम हुआ।

सम्मेलन के द्वितीय दिवस २० मई को प्रातःकाल ६ बजे तीन अलग-अलग सभाकक्षों में चिकित्सक, उद्योगपति एवं बैंकर्स, न्यायविद् परिचर्चाएँ हुईं। संध्या ५.३० बजे सम्मेलन का विशेष आकर्षण चम्बल घाटी के भूतपूर्व दस्यु सरदार पंचमसिंह ने जीवन परिवर्तन सुनाया।

गाँधी नगर गुजरात सेवाकेन्द्र के नये मकान में मुख्य मंत्री के अग्र सचिव भ्राता अशोक नारायण तथा उनकी धर्मपत्नी प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् चित्रों पर समझते हुए।

अहमदाबाद बापूनगर सेवाकेन्द्र के वार्षिकोत्सव समारोह में कालेज के प्रिन्सिपल अपने विचार प्रगट कर रहे हैं। मंच पर हंसमुख भाई, जस्टीस कुरेशी, ब्र० कु० शारदा बहन व अन्य भाई बैठे हैं।

# क्या हम पाप कर्मों की सज़ा से छूट सकते हैं ?

**ले० ब्र० कु० पुष्पा, करोल बाग, नई दिल्ली**

यह प्रश्न कई लोग पूछते हैं कि क्या परमात्मा न्यायाकारी है या दयालु ? वे सोचते हैं कि यदि परमात्मा न्यायकारी है तो वह दयालु नहीं हो सकता और यदि वह दयालु है तो उसे न्यायकारी नहीं कहा जा सकता। उनका विचार चलता है कि यदि परमात्मा किसी प्रकार की रियायत (दंड में कटौती) अथवा क्षमा करता ही नहीं तब भला उसकी आराधना अथवा उससे प्रार्थना इत्यादि करने से क्या प्रयोजन है। और, यदि वह ऐसा करने पर कृपा अथवा दया करके क्षमा अथवा दण्ड में कटौती इत्यादि प्रदान कर देता है तब भला 'जैसा कर्म वैसा फल' अथवा 'जैसी करनी वैसी भरनी' के नियम को अटल कैसे कहा जा सकता है ? कई विचारशील प्राणी ऐसा भी मानते हैं कि परमात्मा 'न्याय' और 'दया' दोनों ही कर सकता है अथवा उसके न्याय में दया और दया में न्याय समाये हुए होते हैं। हर मनुष्य चाहता है कि उससे पाप कर्म न हों तथा वह पिछले किए हुए पाप कर्मों से मिलने वाले दंड से छूट जाये। भक्त लोग परमात्मा से यही माँगते हैं कि वह उन्हें विकर्म करने से बचाये तथा उनके पिछले कर्मों को क्षमा कर दें। वास्तव में उनकी यह तमन्ना अंधश्रद्धा पर आधारित है, इसीलिए पूरी नहीं होती। उन्हें अपनी भावना का इतना भाड़ा तो अवश्य मिल जाता है कि भक्त होने के नाते वे ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास रखते हैं, उससे डरते हैं, जिससे उनका व्यवहार नास्तिक लोगों की अपेक्षा कुछ अच्छा रहता है, किन्तु वे दुःखों से मुक्त नहीं होते। कवि ने कहा है—

ऊधो, कर्मों की गति न्यारी।
सब नदियाँ पानी भर रहियाँ,
उधि रह्यो है खारी,
ऊधो कर्मों की गति न्यारी।
मूरख मूरख राजा कीन्हें
पंडित फिरत भिखारी,
ऊधो, कर्मों की गति न्यारी...।

इसमें संदेह नहीं कि कर्मों की गति अति गहन है किन्तु श्रेष्ठाचारी बनने के लिए कर्म-अकर्म-विकर्म की गति को समझना तथा पाप कर्मों के दुःख रूपी दंड की प्राप्ति के विधान और उससे छूटने के उपाय की पूरी जानकारी आवश्यक है। आज संसार में भक्तों की कमी नहीं किन्तु फिर भी दिनोंदिन पाप-कर्म तथा दुःख और अशान्ति का बढ़ता जाना इस बात का प्रत्यक्ष प्रमाण है कि आज मनुष्य-मात्र इस विषय में सत्य-ज्ञान से वंचित है। भविष्य में पाप कर्म न हों इसके लिए अच्छे और बुरे कर्मों का ज्ञान तो आवश्यक है ही किन्तु पिछले विकर्मों द्वारा उत्पन्न हो चुके बुरे संस्कारों को योग द्वारा भस्म करना भी अति आवश्यक है। प्रस्तुत लेख में पिछले पाप कर्मों के दुःख और अशांति रूपी फल को भोगने तथा उससे मुक्त होने के उपाय पर विचार करते हैं।

**सज़ा द्वारा कर्म भोग**

अपने पाप कर्मों का दंड मनुष्यात्मा को गर्भ में, जीवन काल में तथा मृत्यु के समय दुःख और अशांति के रूप में जन्म-जन्मान्तर मिलता ही रहता है। जैसे सुख की प्राप्ति किन्हीं अच्छे कर्मों के कारण होती है, वैसे ही दुःख का कारण भी मनुष्य के अपने ही पिछले विकर्म होते हैं। इसीलिए कहावत प्रसिद्ध है कि 'आत्मा स्वयं अपना मित्र है और वह स्वयं ही अपना शत्रु है'। अज्ञानी मनुष्य समझता है कि उसे सामने दिखाई देने वाले अमुक व्यक्ति, वस्तु अथवा कारण से दुःख की प्राप्ति हो रही है, किन्तु वास्तव में प्रत्यक्ष दिखाई देने वाले वह कारण तो केवल निमित्त मात्र ही होते हैं और असली कारण तो केवल मनुष्यात्मा के इस जन्म अथवा पूर्व जन्मों में किए हुए अपने ही विकर्म होते हैं। इसीलिए उक्ति है कि 'हीले रिज़क, बहाने मौत'। यह याद रखना चाहिए कि हर एक कर्म

का फल मिलना अवश्यम्भावी है, यह अलग बात है कि कई कर्मों का फल तुरन्त मिल जाता है और कइयों का कुछ समय बाद । परन्तु, जैसा कि लोग कहते भी हैं कि 'ईश्वर के यहाँ देर है किन्तु अंधेर नहीं', हर कर्म का फल भोगना अवश्य ही पड़ता है । अतः हमें अपने प्रत्येक कर्म पर ध्यान रखना चाहिए । कई मनुष्यों को कर्म-भोग के विषय में 'दंड' मिलने की बात समझ में नहीं आती। वे यह तो मानते हैं कि यदि कोई व्यक्ति किसी से कुछ लेता है, तो उसे वह देना पड़ेगा, किन्तु न देने पर उसे दंड कैसे मिलता है, इस बात को स्पष्ट समझ लेना भी ज़रूरी है । सांसारिक रीति से भी यदि कोई चोर धन चुरा कर उसे खर्च कर ले तो वह धन खत्म हो जाने के कारण उससे वसूल नहीं हो सकता, किन्तु न्यायालय उसे कड़ा दंड देकर उसके अपराध का भुगतान कराता है । इसी प्रकार ईश्वरीय विधान के अन्तर्गत भी बहुत से विकर्मों का भुगतान सज़ा द्वारा होता है । सत्य तो यह है कि द्वापर से लेकर कलियुग के अंत तक के २५०० वर्षो में मिलने वाले ६३ जन्मों में मनुष्यात्माएं गिरती कला में होने के कारण हर अगले जन्म में पूर्व जन्म के विकर्मों का पूरा भुगतान नहीं कर पातीं बल्कि उसमें और ही अधिक विकर्म करके अपने पाप कर्मों के हिसाब में वृद्धिकर लेती हैं। इसीलिए कलियुग के अंत में जब महाविनाश के बाद सभी आत्माओं को वापस परलोक लौटना होता है तो उन्हें अपने विकर्मों का खाता चुकता करने के लिए धर्मराजपुरी में कड़ी सजाएँ भोगनी पड़ती हैं। केवल संपूर्ण राजयोगी ही इन सज़ाओं से छूट सकते हैं ।

निस्संदेह पाप-कर्मों से मिलने वाले दंड का ज्ञान हमें विकर्मों से बचने के लिए प्रेरित करता है तथा समय प्रति समय मिलने वाले रोग-शोक-पीड़ा इत्यादि को अपने ही कर्मों का फल जान कर उसे सहर्ष भोगने की शक्ति देता है । किन्तु, प्रश्न उठता है कि क्या पिछले विकर्मों की सज़ा से छुटकारा प्राप्त करने का भी कोई उपाय है या नहीं ?

### प्रायश्चित्त

कई लोग समझते हैं कि किसी विकर्म के हो जाने पर यदि मनुष्य प्रायश्चित्त कर लेता है अर्थात सच्चे दिल से अपने 'गुनाह से तोबा' कर लेता है तो उसकी सज़ा पूरी नहीं तो आधी अवश्य ही माफ़ हो जाती है । वास्तव में प्रायश्चित्त अथवा तोबा करने का केवल इतना ही असर होता है कि पछतावा करने के कारण मनुष्य के मन में उस विकर्म का ज्ञान अच्छी तरह जागृत हो जाता है और उसके दु:ख रूपी परिणाम को देखते हुए वह उसे दोबारा न करने का संकल्प लेता है । इससे उसका मन कुछ हल्का हो जाता है; जिससे भविष्य में उस पाप को पुनः न करने के लिए कुछ सहयोग मिलता है। किन्तु प्रायश्चित्त करने से जो विकर्म हो चुका है, उसकी सजा नहीं घटती । प्रायः देखा गया है कि मनुष्य प्रायश्चित केवल उन्हीं पापों का करता है जिनका दुःख, अशांति अथवा अपमान रूपी फल उसे तुरन्त भोगना पड़ता है । उसी भोगना से प्रभावित होकर वह प्रायश्चित्त करता है। जिस विकर्म की सज़ा उसे प्रत्यक्ष नहीं मिलती, उसके लिए प्रायश्चित करने का वह संकल्प नहीं करता । प्रायश्चित प्रायः उन्हीं पाप कर्मों का किया जाता है जिनके दंड का मनुष्य को पता हो । उदाहरणार्थ अपने पिछले जन्मों में किये हुए विकर्मों की सज़ा तो मनुष्य को वर्तमान जन्म में रोग, शोक, कष्ट, हानि इत्यादि के रूप में मिलती है, किन्तु, उस सज़ा को भोगते हुए उसे यह याद नहीं होता कि पिछले जन्म के किन-किन विकर्मों का फल वह भोग रहा है । इसलिए वह उन विशेष पापों को न करने का तोबा नहीं कर सकता है । चूंकि विकर्मों से मिलने वाला दुःख ही प्रायश्चित का आधार है इसलिए इसका प्रभाव भी अल्पकालिक होता है। आप देखेंगे कि अपने खून से लिखकर तोबा कर लेने के पश्चात् भी मनुष्य उन्हीं विकर्मों को दोहराते रहते हैं । दुःख में मनुष्य प्रायश्चित भी कर लेता है और ईश्वर से झूठे वायदे भी, किन्तु दुःख के दूर होते ही उसके वायदे भी काफ़ूर हो जाते हैं । इसीलिए कहावत प्रसिद्ध है कि—'दुःख में सुमिरण सब करें, सुख में करे न कोय' । आपने नदी पार करने वाले उस व्यक्ति की कहानी भी सुनी होगी जिसकी नदी के बीच तक पहुँचने और पानी गहरा होने के साथ-

साथ मन्दिर में प्रसाद चढ़ाने की राशि भी बढ़ती गई थी किन्तु ज्यूं-ज्यूं दूसरे किनारे पर पहुँचते-पहुँचते पानी घटता गया त्यूं-त्यूं उसके प्रसाद की रक़म की कम होती गई थी। कर्म गति के यथार्थ ज्ञान के बिना मनुष्य न तो विकर्मों से बच सकता है और न उनके दण्ड से।

## प्रार्थना, भक्ति इत्यादि

आज बहुत से मनुष्य समझते हैं कि संसार में यानि गृहस्थ व्यवहार में रहते हुए मनुष्य से जाने-अनजाने कुछ न कुछ पाप कर्म होते रहना तो स्वाभाविक बात है। कुछ समय पूर्व का व्यापारी कहा करता था कि वह बेईमानी से धन नहीं कमायेगा क्योंकि वह बाल-बच्चों वाला है। (अर्थात् वह अपने परिवार को अवैध कमाई नहीं खिलाना चाहता था) किन्तु, आज का व्यापारी कहता है कि उसे अपने बाल-बच्चों की पालना करने के लिये बेईमानी करनी ही पड़ती है। प्रायः गृहस्थी यह समझते हैं कि एक ओर तो वह अपने सांसारिक जीवन में विकर्म करते जायें और दूसरी ओर भक्ति, पूजा, प्रार्थना, दान इत्यादि करते जायें तो इन अच्छे कर्मों से बुरे कर्मों का खाता कट जायेगा। वह भूल जाते हैं कि पाप की कमाई में से दान इत्यादि करना भगवान को भी रिश्वत देने की कोशिश करने के बराबर है। मंदिर का कलियुगी पुजारी भले ही अपने स्वार्थ के लिए ऐसे धन को स्वीकार कर ले किन्तु भगवान उसे कभी स्वीकार नहीं करते। इसी रीति से मनुष्य को अपने अच्छे तथा बुरे दोनों प्रकार के कर्मों का फल भोगना पड़ता है और अच्छे कर्म करने से बुरे कर्मों की सज़ा से मुक्ति नहीं मिल सकती। प्रार्थना करने वाले भक्त भी प्रायः एक ही (या दो चार) प्रकार की प्रार्थना नित्य प्रति दोहराते रहते हैं, ठीक उसी रीति जैसे कि माला फेरने वाले बारम्बार उन्हीं मणकों को घुमाते रहते हैं। प्रत्यक्ष को क्या प्रमाण ? आप देखेंगे कि जन्म-जन्मातर प्रार्थनाएँ करते रहने पर भी भक्तों के व्यावहारिक जीवन में कोई अन्तर नहीं आता। मनुष्य के जीवन का उत्थान उसके अपने श्रेष्ठ कर्मों के द्वारा ही हो सकता है न कि किन्हीं प्रार्थनाओं के दोहराने से।

फिर आजकल तो मनुष्य अज्ञानवश यह समझते हैं कि परमात्मा ही अच्छे तथा बुरे कर्म करवाता है बल्कि यहाँ तक कि वह सर्वव्यापी और स्वयं ही सब कुछ कर रहा है। यदि ऐसा ही है, तब तो यह मानना होगा कि पाप-कर्म परमात्मा करवाता ही नहीं बल्कि करता है। विचार की बात है कि तब परमात्मा के द्वारा किये हुए कर्मों का दुःख रूपी फल इन बेचारे भक्तों को क्यों भोगना पड़ रहा है ? परमात्मा को दयालु और क्षमा का सागर कहते हुए भक्तजन उसका नाजायज़ फायदा लेने की कोशिश करते हैं। वे समझते हैं कि गुनाह करने के बाद भगवान से तोबा कर ली जाये तो वह बख्श देता है। ईसाई लोग भी हर रविवार को चर्च में जाकर पिछले सप्ताह के गुनाह बख्शवाने का प्रयत्न करते हैं। परन्तु, वास्तव में यदि ऐसा होता तो ऐसे भक्तों को कोई भी दुःख न भोगना पड़ता। यदि परमात्मा इस प्रकार गुनाह बख्शता रहे तब तो वह मनुष्यों को पाप करने का प्रोत्साहन देने के निमित्त बन जाये।

## सहज राजयोग

पिछले विकर्मों को दग्ध करने का एक ही उपाय है और वह है सहज राजयोग। इसलिए गीता के भगवान ने वेद-अध्ययन, दान-पुण्य, जप-तीर्थ आदि को अयथार्थ कहकर राजयोग को ही विकर्म विनाश करने का एकमात्र सही साधन बताया है। यह योग स्वयं परमात्मा ही कल्पांत (कलियुग के अन्त) के समय साकार प्रजापिता ब्रह्मा के तन में अवतरित होकर सिखाते हैं (और वर्तमान समय पुनः सिखा रहे हैं)। यह तो सभी जानते हैं कि आत्मा शरीर के द्वारा ही कर्म कर सकती है और वह अपने किये हुए कर्मों का सुख अथवा दुःख रूपी फल भी शरीर के द्वारा ही भोगती है। ऐसा नहीं कि हर मनुष्य के कन्धों पर कोई दूत बठे रहते हैं जो कि उसके कर्मों का हिसाब-किताब लिखते रहते हैं अथवा ऐसे कोई दूत ऊपर ईश्वर के दरबार (अथवा धर्मराजपुरी) में यह कार्य करते हैं। वास्तव में मनुष्यात्माओं के कार्य करने तथा फल भोगने का विधान साधन उनकी

आत्मा में ही निहित रहता है। जब कोई मनुष्य अच्छा अथवा बुरा कर्म करता है तो तुरन्त ही उसका प्रभाव, छाप अथवा असर आत्मा में 'संस्कार' रूप में भर जाता है। यह संस्कार ही उसके अगले कर्मों के संकल्पों को प्रेरित करते हैं और यही मनुष्यात्मा के साथ अगले जन्म में भी चलते हैं। यह कहना अयथार्थ है कि आत्मा निर्लेप है और उस पर अच्छे तथा बुरे कर्मों का लेप-विपेक्ष नहीं पड़ता। वास्तव में इन संस्कारों के अनुसार ही मनुष्य को जन्म, शरीर, आयु, सम्पत्ति, परिवार इत्यादि मिलते हैं। यही संस्कार उसको अच्छे कर्मों का सुख और बुरे कर्मों का दुःख रूपी फल दिलवाने के निमित्त बनते हैं। विकर्मों की सज़ा से छूटने के लिए पुराने बुरे संस्कारों को भस्म करना ज़रूरी है। इसके लिए आत्मिक शक्ति की आवश्यकता है जो केवल सर्व शक्तिमान पारलौकिक परमपिता परमात्मा शिव से बुद्धि योग लगाकर ही प्राप्त की जा सकती है। जैसे सूर्य की किरणों को 'लेन्स' द्वारा एकत्रित करके अग्नि उत्पन्न करते हैं वैसे ही ज्ञान सूर्य परमात्मा से बुद्धि की तार जोड़ कर ही योगाग्नि प्रज्ज्वलित की जा सकती है जिससे कि पुराने अशुद्ध संस्कार भस्मीभूत हो जावें। इस योग से मनुष्यात्मा की देह और देह के सम्बन्धों की जंजीरें टूट जाती हैं और वह विकर्मों की सज़ा से मुक्ति पा लेती है। यह राजयोग निरन्तर लगाया जा सकता है परन्तु इसके लिए परमपिता परमात्मा के स्वरूप, धाम, गुणों, एवं कर्त्तव्यों का परिचय तथा उनसे बुद्धि योग जोड़ने की विधि का ज्ञान आवश्यक है जो व्यक्तिगत सम्पर्क से प्राप्त किया जा सकता है।

# दुख का अब नाम न ले कोई !

१ दुःख-जन्य विकर्मों के बन्धन
शिव एक-एक कर काट रहा
विष निकाल रहा जड़-चेतन का
सुखदायी अमृत बाँट रहा
अमृत पीने की एक शर्त,
माया का जाम न ले कोई !
दुःख का अब नाम न ले कोई !

२ उसके अमृत की एक घंट
मन के सब रोग हरण करती
आसान योग की बात हुई
तरकीब बड़ी ही प्यार भरी
वह गुणदाता गुण देता है,
अवगुण के ग्राम न ले कोई !
दुःख का अब नाम ले कोई !

३ यह तो संगम के दिन आये
मोजों के और बहारों के
यह दो शब्द का ज्ञान अरे !
कोई भी बात नहीं गहरी
प्रभु के मिलने का पर्व यही,
अब और विराम न ले कोई !
दुःख का अब नाम न ले कोई !

४ हम देही संतति हैं शिव की
क्या बात रही फिर संशय की
है राज-भाग सतयुगी सृष्टि
देने-लेने के निश्चय की
दुःखधाम यह बड़ा दुःखदायी,
फिर क्यों सुखधाम न ले कोई ?
दुःख का अब नाम ले कोई !

—ब्रह्माकुमार रामऋषि 'शुक्ल', लखनऊ

# अब परमात्मा का अनुभव सहज ही हो सकता है

ब्र० कु० सुरेश गुप्ता, इन्दौर

आज उपदेशकों और तथा-कथित धर्म-प्रचारकों ने परमात्मा के विषय को एक ऐसा हौआ बना रखा है कि लोग उससे डर जाते हैं। उदाहरण के तौर पर परमात्मा को मानने वाले उपदेशक प्राय: कहते हैं कि—"परमात्मा को अनुभव करना तो अत्यन्त कठिन कार्य है। ऋषि और मुनि, उन्होंने सारी आयु घोर तपस्या की, वह भी अन्त में नेति-नेति कहते गये। अनेक यति-सती भी उसे न पहचान सके और आखिर उन्होंने भी हार मानकर यही कहा कि परमात्मा का भेद नहीं पाया जा सकता। इसलिये, अगर अनेक जन्म तपस्या करने के बाद किसी को परमात्मा के दर्शन हो जायें अथवा परमात्मा का ज्ञान हो जाय तो समझना चाहिये कि असम्भव बात सम्भव हो गई है।" यदि इन उपदेशकों से पूछा जाय कि क्या आपने परमात्मा का अनुभव किया है, तो वे कहते हैं कि—"अनुभव क्या, हम सभी परमात्मा ही के तो अंश है।" अन्य कई कहते हैं—"हम तो उसकी खोज में लगे हुए हैं, परमात्मा का मिलन इतना सहज थोड़ेई है? यदि हमें उसका अनुभव प्राप्त हो गया होता तो हम यहीं थोड़ेई बैठे होते, हमतो किसी गुफ़ा में चले गये होते। हम तो आपको शास्त्रों की बात बता रहे हैं और ऋषियों के वचन सुना रहे हैं। आप भी उन्हें श्रद्धा-पूर्वक सुनते चलो।"

इस प्रकार की बातें सुनकर लोग समझते हैं कि शायद परमात्मा है ही नहीं, तभी तो इतनी कठिन साधनाओं के बाद भी उसका अनुभव नहीं किया जा सकता और कोई भी हौसला देकर और हिम्मत बंधाकर यह नहीं कहता कि—"मैंने उसका अनुभव किया है और आप को भी उसका अनुभव अमुक सहज मार्ग से हो सकता है।" ऐसा आश्वासन न मिलने से और परमात्मा के परिचय के बारे में परस्पर विरोधी बातें सुनने से वे इसी परिणाम पर पहुँचते हैं कि लोग अपने अनुमान ही से परमात्मा के बारे में कुछ-न-कुछ कहते आये हैं, उन्हें इस विषय का या तो अनुभव नहीं है या परमात्मा है ही नहीं और यदि परमात्मा सचमुच है तो उसे जान सकना अथवा अनुभव कर सकना हमारे बस की बात नहीं है। हम एक तो कन्दमूल खाकर गुज़ारा करने से रहे और दूसरे, घर-बार छोड़कर तथा सिर मुँडवाकर जंगल में जाने से और संन्यासी बनने से भी रहे। इसलिये, हम जैसे हैं वैसे ही ठीक हैं। हमारे लिये 'बुद्धु' नाम ही ठीक है। हम संसारी लोग हैं, कभी ईश्वर की कृपा हो गई तो दर्शन हो जायेंगे वरना तो गाड़ी चल ही रही है! जहाँ अन्य सभी संसारी जा रहे हैं, वहाँ हम भी उनके साथ हैं, जो कुछ होगा देखा जायेगा। हाँ, हरि नाम का थोड़ा भजन-कीर्तन हम कर लिया करेंगे।'

इस प्रकार की बात कोई सौ-दो सौ व्यक्ति नहीं, करोड़ों लोग कहते हैं और इसका कारण यह है कि जगह-जगह परमात्मा के बारे में ग़लत और व्यर्थ बातें बता कर उन्हें निरुत्साहित किया गया है। परमात्मा के स्वरूप के बारे में परिपाटी के पुजारियों ने युक्ति-रहित, मिथ्या अथवा परस्पर-विरोधी बातें सुना-सुना कर लोगों का मन परमात्मा से हटा दिया है और या तो उन्हें कर्म-काण्डी तथा अन्ध-श्रद्धालू बना दिया है या हठी और धर्म के विषय में ऐसा झगड़ालू बना दिया है कि दूसरों की बात सुनते ही उन्हें झट गुस्सा आ जाता है और बात उनकी सहन-शक्ति से बाहर हो जाती है। उन्होंने परमात्मा को जानने के लिए अमुक-अमुक शास्त्रों, ग्रन्थों, भाषाओं तथा व्याकरणों आदि-आदि का पाण्डित्य प्राप्त करने तथा कर्म-काण्डी बनने की कड़ी शर्तें लगाकर लोगों को इस विषय के प्रति उदासीन बना दिया है और अपने पास कर्म-काण्ड तथा उपदेश का ठेका रख लिया है और वायुमण्डल को ऐसा बना दिया है कि आज यदि कोई कहे भी कि—"हमें परमात्मा का अनुभव हुआ है" तो वे उसे सन्देह से घूरने लगते हैं और उस पर उपहास करते हैं।

अतः आज किञ्चित विचार करने का अवसर है कि यह सब क्या हो रहा है ? परमात्मा तो हम सब आत्माओं के परमपिता हैं और आनन्द, शान्ति तथा प्रेम के सागर हैं, तब भला उनसे मिलना इतना कठिन क्यों होना चाहिये ? उसके लिये नासिका बन्द करके प्राणायाम करने, एक टाँग पर खड़े होने, सिर मुँडवाने या घर-बार छोड़ने की आवश्यकता क्यों होनी चाहिये ? जबकि परमात्मा दयालु और कृपालु हैं तो वह वत्सों से इतनी कठिन साधनाओं की माँग क्यों करते हैं, हमें इतनी यातनाओं में क्यों डालते हैं ? क्या परमात्मा का हमारे प्रति बस इतना ही प्रेम है कि हम एक टाँग पर खड़े रहें और वह इसे तमाशा अथवा सर्कस के एक नट का अभिनय (कर्तब) समझकर देखता रहे ?

नहीं, नहीं, परमात्मा के बारे में यह सभी विचार बिल्कुल ही निराधार और मिथ्या हैं। जिन्होंने परमात्मा का अनुभव प्राप्त नहीं किया वे ही परमात्मा के विषय को अति कष्टमय और 'कड़वी घुट्टी' मानते हैं तथा दूसरों को भी संन्यास करने तथा जंगलों और गुफ़ाओं में रहने का उपदेश देते हैं। ऐसे लोगों की बातें तब तक चलती हैं जब तक परमप्रिय परमात्मा स्वयं इस धरा पर अवतरित नहीं होते। जब वह अवतरित होते हैं तब मनुष्यात्माओं को अपने पिता से सहज ही मिलने का, उसके स्वरूप का सहज ही अनुभव प्राप्त करने का, उसका सही परिचय तथा उसकी शिक्षा प्राप्त करके जीवन को विकारी से निर्विकारी और अशान्त से शान्तिमय तथा आनन्दमय बनाने का अवसर मिलता है। तब परमपिता परमात्मा सभी आत्मा रूपी वत्सों को स्नेह और प्यार से समझाते हैं और ज्ञान-मुरली से उनको आनन्दित करते हैं। तब मनुष्य जानता है कि परमात्मा से मिलना उल्टा लटकने की तरह कठिन नहीं है बल्कि यह तो मनुष्यात्मा रूपी सन्तान का अधिकार है। उसके लिए **लोक को नहीं छोड़ना पड़ता** बल्कि **लोक-लाज को छोड़ना पड़ता है। गृहस्थी** को नहीं त्यागना पड़ता, **आसक्ति** को त्यागना होता है। **संसार की दृष्टि से ओझल होकर** जंगल या गुहा में **नहीं** छिपना होता बल्कि इस शरीर को गुहा मानकर और संसार को विषय-विकार रूपी काँटों वाला जंगल मानकर मन को परमात्मा में लगाना होता है अथवा इस **संसार को अपनी दृष्टि से ओझल करके,** इसमें रहते हुए भी इससे न्यारा रहना होता है। कन्द-मूल खाकर जीवन व्यतीत करने की आवश्यकता नहीं होती बल्कि 'कन्द' का अर्थ 'मीठा' और मूल का अर्थ परमात्मा अथवा उसका मौलिक ज्ञान मानकर इस अव्यक्त कन्द-मूल पर सहर्ष जीवन व्यतीत करना होता है।

आज वह स्वर्णिम अवसर ५००० वर्ष पहले की तरह फिर आ चुका है। यहाँ कितने ही बहन-भाई अपने **अनुभव के आधार** पर कह सकते हैं कि—"अब वह पतित-पावन, सुख-शान्ति के दाता कल्याणकारी परमपिता परमात्मा शिव अवतरित होकर ज्ञान-मुरली बजा रहे हैं और, जैसे उन्होंने पहले गोप-गोपियों को अतीन्द्रिय सुख दिया था अब पुनः वह आत्मिक शान्ति तथा आनन्द दे रहे हैं। वह मनुष्य को भोगी से योगी और पापात्मा से पुण्यात्मा बनाकर मुक्ति तथा वैकुण्ठ के राज्य-भाग्य का अधिकारी बना रहे हैं। आप भी यह अनुभव और यह ईश्वरीय देन प्राप्त करने का पुरुषार्थ कर सकते हैं।"

परन्तु हम यह बात अच्छी तरह जानते हैं कि आज वातावरण ऐसा हो चुका है कि ५००० वर्ष पहले की तरह गीता के शब्दों के अनुसार "हज़ारों अथवा कोटि-कोटि लोगों में से कोई विरला" ही इस बात पर विश्वास करके इसका अनुभव प्राप्त करने की कोशिश करेगा। गीता के शब्दों के अनुसार, "बहुत से मन्द मति अथवा मूढ़-मति लोग तो भगवान् के साधारण तन में अवतरित हुए होने के कारण उसे तुच्छ समझेंगे अथवा उसे जन्म-मरण में आने वाला कोई साधारण व्यक्ति ही मानेंगे।" परन्तु यह कमी उनकी अपनी ही कमी होगी, प्रेम-स्वरूप, कल्याणकारी परमपिता परमात्मा तो सभी के हित के लिए मनुष्यमात्र को अपना परिचय, सन्देश और आदेश दे ही रहे हैं। लेकिन हम जानते हैं कि जिस चीज़ के बारे में मनुष्य ने यह सोच

(शेष पृष्ठ पर १४)

# सामूहिक राजयोग

ब्र० कु० वेदान्ती, राजोरी गार्डन, नई दिल्ली

योग व्यक्तिगत साधना है। सच्ची सुख-शान्ति की प्राप्ति के लिए प्रत्येक जीवात्मा को अपना बुद्धि-योग अन्य जीवधारियों तथा पदार्थों से निकाल शान्ति सागर, आनन्द सागर परमपिता परमात्मा से लगाना आत्यावश्यक है। इससे ही उसे अतीन्द्रिय आनन्द की प्राप्ति होती है। अनेक जीवधारियों तथा पदार्थों में भटकता मन भला शान्त कैसे हो सकता है? अनेक की स्मृति को छोड़ एक की स्मृति में टिकना ही योग है जिससे आत्मा पतित से पावन तमोप्रधान से सतोप्रधान, विकारी से निर्विकारी बन जाती है। योग के लिए एकान्त, शान्त स्थल ही उपयुक्त है। आत्मिक विकास के लिए एकान्त मनन चिन्तन आवश्यक है। लेकिन साथ ही सामूहिक योग का भी महत्त्व है। अतः प्रजापिता ब्रह्मा-कुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय के सेवा केन्द्रों में साधक बहन-भाई एक साथ एकत्र होकर, परम प्रिय परमपिता परमात्मा शिव की पावन, मधुर स्मृति में बैठते हैं।

## एक-दूसरे पर तथा वातावरण पर प्रभाव

यदि एक खाली कमरे में दो कोनों पर दो सितार तारों को सन्तुलित कर रख दिया जाय और एक सितार के तारों को कुशल सितार वादक झंकृत करे तो दूसरे सितार के तार स्वतः ही झंकृत हो उठते हैं। पहले सितार द्वारा उत्पन्न कम्पन्न हवा के माध्यम से पहुँचकर दूसरे सितार के तारों को कम्पित कर देते हैं। इस तरह दो जड़ पदार्थ भी एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। आत्मा सूक्ष्म है और आत्मा से उत्पन्न कम्पन्न भी सूक्ष्म, अतः अधिक प्रभावोत्पादक हैं। यदि कई जीवात्मायें एक साथ सामूहिक योग में बैठें तो एक योगी आत्मा से उत्पन्न भावधारायें अन्य हल्की आत्माओं को प्रभावित कर योग-युक्त बना सकती हैं। प्रबल भाव धारायें संक्रामक होती हैं और वे अपने आसपास के वातावरण को तेजी से प्रभावित कर दूसरी आत्माओं के भावों को भी बदल डालती हैं। शक्तिशाली आत्मा जो चिन्तन बारम्बार करती है उस की सूक्ष्म भाव धारायें चतुर्दिक वातावरण में व्याप्त हो जाती हैं और दूसरी आत्माओं को प्रभावित करती हैं। इन भावधाराओं से मनुष्य तो क्या पशु-पक्षी भी प्रभावित होते हैं। प्रेमपूर्ण अहिंसक योगियों के आस-पास हिंसक पशुओं द्वारा निर्भय विचरण की कथायें तो सर्वविदित ही हैं।

## दृष्टि का महत्त्व

सामूहिक योग की पद्धति में इस ईश्वरीय विश्व-विद्यालय द्वारा और भी विकास किया गया है। यहाँ सामूहिक योग में एक शक्तिशाली आत्मा पूर्ण योगयुक्त होकर अन्य आत्माओं को योग दृष्टि देती है। इस शक्तिशाली योग दृष्टि के मिलते ही आत्माओं का भटकता बुद्धियोग एकाग्र हो जाता है और परम प्रियतम परमात्मा के प्रेम पूर्ण चिन्तन में लवलीन हो जाता है। पुनश्च, नर-नारी द्वारा परस्पर एक-दूसरे को योगयुक्त दृष्टि से देखने पर शरीर का भान समाप्त हो जाता है। आत्मिक दृष्टि से देखने का यह अभ्यास धीरे-धीरे हमारा सहज स्वभाव बन जाता है और विकारी दृष्टि निर्विकारी में परिणित हो जाती है।

## आँखें खुली रखने का कारण

सामूहिक योग में हम आंखें बन्द कर नहीं, वरन् खोलकर बैठते हैं। इस तरह एक तो हमें शक्तिशाली आत्मा से योग दृष्टि मिलती है और दूसरे खुली आँख से योग करने का अभ्यास होता है। २४ घण्टे में आँखें बन्द करके तो हम कुछ घण्टे ही बैठ सकते हैं। बाकी समय सांसारिक कार्य कलाप खुली आँखों से ही करना पड़ता है। यदि हम आँखें बन्द कर योग का अभ्यास करेंगे तो आंखें खुली होने पर योग नहीं लग सकेगा और फलस्वरूप हम निरन्तर योगी नहीं बन सकते हैं। लेकिन यदि हम

खुली आँख से देखते हुए भोतिक पदार्थों को न देखकर ईश्वर चिन्तन और आत्म चिन्तन का अभ्यास करगे तो सांसारिक कार्य-कलापों के बीच भी अवकाश मिलने पर ईश्वर चिन्तन में सहज ही तत्पर हो जायेंगे। इसके लिए आसन लगा आँख बन्द करने की आवश्यकता अनुभव नहीं करेंगे। तब हम दफ़्तर, दुकान, व्यवसाय में व्यस्त क्षणों में खुली आँख से योग में टिक सकते हैं और इस तरह निरन्तर योगी बन सकते हैं। यह अभ्यास पहले कुछ कठिन मालूम पड़ेगा। लेकिन धीरे-धीरे सहज और स्वाभाविक हो जायेगा। वस्तुत: ऊँची वस्तु निर्मूल नहीं मिलती है। उसके लिए ऊँचा मूल्य चुकाना ही पड़ता है।

## योगाभ्यास में संगीत का संस्थान

प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्वविद्यालय में सामूहिक योग में ईश्वर विषयक गीत बजाए जाते हैं। ईश्वरीय प्रेम पैदा करने में संगीत का महत्त्व सर्वमान्य है। संगीत की मधुर ध्वनि मनुष्य के बुद्धियोग को सब तरफ से निकाल परमपिता परम आत्मा में ले जाती है। इस तरह योग की प्रारम्भिक अवस्था में संगीत बुद्धि योग को एकाग्र करने में सहायक होता है। योग की उच्च अवस्था में जब मनुष्य का बुद्धि योग परमात्मा में पूर्ण रूपेण तल्लीन हो जाता है, संगीत या बाह्य दुनिया की कोई भी ध्वनि सुनाई नहीं पड़ती है। इस तरह संगीत की ध्वनि योग के पूर्णता की कसौटी भी है। योग की उच्चतम अवस्था वही है जब संगीत श्रवणगत न हो।

आधुनिक वातावरण ग्रामोफोन, रेडियो और टेप के सुमधुरसं गीतों से ओत-प्रोत है। जहाँ जाइए, संगीत की मधुर ध्वनि आपको सुनाई देगी तथा बुद्धियोग को अपनी ओर आकृष्ट करेगी। लेकिन यदि हमने संगीत के माध्यम से अपनी बुद्धि को परमपिता परमात्मा की ओर ले जाने का अभ्यास किया है तो संगीत हमारे योग में सहायक बन जाएगा। बहुधा ऐसा होता है कि जब हमारी बुद्धि दुनिया की उलझनों में फँसकर भटक रही हो उस समय संगीत की यह ध्वनि हमारे योग से सम्बद्ध होने के कारण हमें परमात्मा की याद दिला देती है तथा हमारी अवस्था को योगयुक्त बना देती है। इस तरह संगीत जो एकान्त योग में बाधक हो सकता है वही हमारे योग में साधक बन जाता है।

## सम्बद्धता का सिद्धान्त

दो वस्तुओं को सम्बद्धता के विषय में अनेक मनोवैज्ञानिक प्रयोग किए गए हैं। एक मनोवैज्ञानिक ने एक कुत्ते को रोटी का टुकड़ा दिखलाया जिससे उसके मुख में लार उत्पन्न होने लगी साथ ही उसने घण्टी भी बजाई। यह प्रयोग १५ दिनों तक किया गया जिससे घण्टी का रोटी से अन्तर्सम्बन्ध कुत्ते के लिए स्थापित हो गया। तत्पश्चात् उसने बिना रोटी दिखलाए घण्टी बजाई। घण्टी के बजते ही कुत्ते के मुख में लार उत्पन्न हो गया। घण्टी से लार का कोई सम्बन्ध नहीं है। लेकिन उस कुत्ते के लिए घण्टी का अन्तर्सम्बन्ध लार से स्थापित हो गया। अत: घण्टी बजते ही लार उत्पन्न होने लगा। उसी तरह हमारे योगाभ्यास का अन्तसंम्बन्ध संगीत से स्थापित हो जाने के कारण संगीत योग उत्पन्न करने में सहायक बन जाता है। ऐसे ही योगाभ्यास में खुली आँख से शरीर को देखते हुए व्यक्त शरीर को न देखकर अव्यक्त आत्मा को देखने का अभ्यास हमारी दृष्टि को सदा के लिए आत्मिक बना देता है।

स्पष्टत: आत्मिक उत्थान के लिए सामूहिक योग का महत्त्व है। लेकिन साथ ही वैयक्तिक योग भी अत्यावश्यक है। एकान्त चिन्तन से ही हमारी धारणा और अवस्था परिपक्व होती है तथा हमें सच्चे अतीन्द्रिय आनन्द की अनुभूति होती है। वस्तुत: योगी आत्मायें एकान्तप्रिय होती हैं। उनका अन्तरमन आनन्द से परि-पूर्ण होता है। अत: सुख शान्ति की प्राप्ति के लिए दोनों प्रकार के योग जरूरी हैं।

OO

# सतयुग और राज्य विस्तार

ब्र० कु० रमेश, गामदेवी, बंबई

इतिहास यह एक अनोखी विशेष प्रकार की दास्तान है। कहा गया है कि "जितना हमारा इतिहास पुराना है उतने ही हम पुराने हैं" (We are as old as our history)। इतिहास में बहुत कुछ समझने की बातें मिलती हैं। यदि मानव ने इतिहास से अच्छी रीति से सबक सीखा होता तो विश्व का इतिहास आज कुछ और होता। रशिया में सर्दी बहुत होती है और ऐसी ऋतु में रशिया पर चढ़ाई करने वाला नेपोलियन युद्ध हार गया, यह इतिहास का सबक यदि हिटलर ने सीखा होता और वह भी दूसरे विश्व-युद्ध के समय रशिया से युद्ध नहीं करता तो आज विश्व का इतिहास और कुछ होता। इतिहास, मानव-सभ्यता, समाज तथा उसकी प्राप्ति-अप्राप्ति, हार-जीत विस्तार और संकीर्णता का दर्पण है। यह दर्पण अनेक बातें बताता है जैसे कि धर्म एक शक्ति है। धर्म द्वारा मानव का उत्थान अर्थात् विकास होता है। परंतु धर्म के नाम पर ही ज्यादा से ज्यादा युद्ध हुए हैं। धर्म का यह कटु-सत्य यदि मानव सीखता तो आज धर्म का इतिहास भी कुछ और होता।

ऐसे ही राज्य-विस्तार बढ़ाने की इच्छा अदम्य इच्छा है। राज्य-विस्तार के लिये प्राचीन काल में राजायें अश्वमेघ यज्ञ करते थे। अनेक यज्ञ हुए और राज्य विस्तार के लिए अनेक युद्ध भी हुए। परंतु यूनान के राजा सिकन्दर (Alexander) का सबक "सब खाली हाथ जाने वाले हैं—यह दिखाने के लिये उसने अपनी कफन से अपने खाली हाथ दिखाये"—यह बात यदि सब राज्य-विस्तार के इच्छुक सीख लेते तो विश्व पर अपना अधिक से अधिक साम्राज्य बढ़ाने का स्वप्न कई राजायें नहीं रखते। परंतु वास्तविकता यह है कि यह बात कोई सीखता नहीं और आज भी विश्व में राज्य विस्तार के लिये युद्ध होते हैं। एक अन्दाजा है कि दूसरे विश्व-युद्ध से अब तक अर्थात १९४५ से १९८४ के बीच में विश्व में १३२ युद्ध हुए हैं जिसको देखकर सब सोचते हैं कि क्या यह तीसरा विश्व-युद्ध है? ये १३२ युद्ध राज्य-विस्तार की लालसा के प्रतिबिंब हैं। तो क्या राज्य-विस्तार की इच्छा सदा ही दुःखदायी रही है?

राज्य-विस्तार की भावना सृष्टि के आदिकाल से है। परमपिता शिव परमात्मा ने हमें श्रीलक्ष्मी श्रीनारायण का चित्र विश्व के राज्य-विस्तार के प्रतीक के रूप में दिया है। यह चित्र सतयुगी धन-वैभव, कला, महलों का दृश्य, सौंदर्य, सामर्थ्य का प्रतीक है और उसी में प्रारंभ काल में राज्य-विस्तार कहाँ तक था उसका सूचक (Suggestion) भी है क्योंकि चित्र के नीचे की टिप्पणी में लिखा है विश्व-महाराजन विश्व-महाराणी। विश्व-महाराजन विश्व-महाराणी श्री नारायण और श्रीलक्ष्मी सुख शांति सम्पन्न विश्व के प्रतीक हैं तथा विश्व में एक राज्य-राज्यसत्ता के प्रतीक हैं अर्थात् समस्त विश्व पर साम्राज्य होते भी यह राज्य-विस्तार सुख-शाँति का दृष्टान्त है। वही साम्राज्य सच्चा रामराज्य था क्योंकि सबके परमपिता परमात्मा "राम ने" उसकी स्थापना की थी। अर्थात विश्व के राज्य-विस्तार का इतिहास विश्व में एक का राज्य—सच्चे रामराज्य से शुरू होता है। भारत सरकार ने भी लक्ष्य रखा है कि रामराज्य की पुनः स्थापना करें। परंतु जब तक सतयुग के सच्चे इतिहास को भारत सरकार नहीं जानती तब तक रामराज्य का स्वप्न साकार नहीं हो सकता।

आज के अपने ईश्वरीय विश्वविद्यालय का इतिहास, विश्वविद्यालय के हरेक क्षेत्र में विस्तार भविष्य सतयुगी सृष्टि के विस्तार का प्रतीक है। इस विश्वविद्यालय की स्थापना के समय थोड़ी आत्मायें थीं इस कारण एक-दूसरे को पूर्ण रूप से

जानते थे। एक छोटा प्यार भरा परिवार था। उसी समय की छोटी बातें भी इतिहास में अमर हो गईं। एक दिन का प्रवेश-रोधन (Picketing), एक दिन मकान को आग लगाने का प्रयत्न आदि बातें आज भी सब याद करते हैं। आज विश्व-विद्यालय में संख्या, सेवा, सम्पत्ति, साधन, साहित्य आदि सब बातों में वृद्धि हुई है फिर भी प्रारंभ की वे बातें यज्ञ का इतिहास है। वह नींव (Foundation) है जिस पर आज वर्तमान तथा कल भविष्य की इमारत खड़ी है और होगी। आज सब ब्राह्मण यज्ञ वत्स यही शुभ भावना रखते हैं कि हम यज्ञ के आरंभ से आते तो कितना अच्छा होता।

ऐसे ही सृष्टि के प्रारंभ की राज्य विस्तार की गाथा है। जैसे यहाँ ब्रह्मा बाबा स्थापना के निमित्त बने और हर छोटी-बड़ी बात का निर्णय करते थे (मैंने देखा है कि आज भोग में क्या बने, अगर मीठा चावल बनना है तो कितने चावल का बने, टोली में क्या बाटें, आज की मुरली टेप करें या नहीं आदि-आदि सब बातों का निर्णय बाबा करते थे)। ऐसे ही सतयुग की प्रारंभिक राज्य व्यवस्था के समय आदिदेव बनकर सभी देवी-देवताओं का पालन विष्णु के साकार प्रतीक बनकर ब्रह्मा बाबा की आत्मा श्रीनारायण के रूप को धारण करके करेगी। नया-नया राज्य होने के कारण अनेक प्रकार की बातों का निर्णय करना होगा। आज की सृष्टि में कड़ी उलझनें आती हैं तो वहाँ पर मीठी उलझनें आयेंगी—महल ऐसा हो या ऐसा—मुकुट की डिजाइन (Design) कैसी हो, आज भोजन पर किसको निमंत्रण दें? इत्यादि।

आज भी वे दिन याद हैं जब पांडव भवन में छोटा-सा रसोईघर (Kitchen) था। बाहर पत्थर की बनी हुई मेज थी और पत्थर को ड्रम पर रखकर उसी की कुर्सियाँ बनी हुई थीं और उसी भोजन को रॉयल टेबल कहते थे और ब्रह्मा बाबा तथा मातेश्वरी सरस्वती के साथ हम बच्चे ब्रह्मा भोजन करते थे। आज तो वह रॉयल टेबल नहीं है अभी तो लकड़ी का सुन्दर टेबल तथा कुर्सियाँ मधुवन में हैं परंतु उसे कोई रॉयल टेबल नहीं कहते। उसी तरह प्रारंभ में राज्य स्थापना के दिनों में जो जो बातें हुई हैं वे यादगार के रूप में गायन-पूजन के रूप में आयेंगी।

जब ब्रह्मा बाबा साकार रूप में थे तो देखो बड़ी दीदी देहली में थी, तो कुमारका दादी बम्बई आदि में थी। आज की कई ज़ोन इनचार्ज भाई-बहनें, सेन्टर इनचार्ज बहनें या तो टीचर के रूप में या स्टूडेंट के रूप में थे। उसी तरह वह प्रथम श्री लक्ष्मी श्रीनारायण के राज्य में बाद में वही तख्तनशीन होने वाले, या अन्य राजाओं की राज-गद्दी संभालने वाले श्री लक्ष्मी नारायण के राज्य कारोबार में रॉयल फेमली के सदस्य या साहूकार आदि रूप में होंगे। ऐसी शिस्तनबद्ध, संयमी सतो-प्रधान आत्माओं के सहकार से चलने वाला राज्य जरूर श्रेष्ठ होगा।

लोग कहते हैं कि जितना मनुष्य वृद्ध होता जाता है उतना ही अनुभवी बनता है। उम्र बहुत-सी बातें सिखाती हैं। आज के सृष्टि में 60-70 वर्ष की आयु सामान्य रूप में मानी जाती है किन्तु सतयुग में तो आयु 150 वर्ष की होगी। 150 वर्ष की आयु या उम्र मनुष्य को अनेक बातें सिखायेगी। उसी कारण समाज सयाना और समझदार होगा तो राज्याधिकारी भी इतने ही समझु और अनुभवी होंगे और उसी कारण राज्य व्यवस्था अच्छी होगी।

राज्य विस्तार की सीढ़ी इस प्रकार है। पहले अपने पर राज्य, बाद में परिवार में, जिस समाज में रहना है उसी पर राज्य फिर वही शहर या छोटे इलाके में राज्य और अंत में वही बड़े विस्तार को जिसको देश (Nation) कहते हैं उसी में राज्य। इस प्रकार से पाँच क्रम (Steps) की राज्य विस्तार की सीढ़ी है। सतयुग में स्व का स्व पर पूर्णरूप में साम्राज्य है (आज विकारों का राज्य है), परि-वार में बड़े का राज्य होगा, व्यवसाय में भी लोग बुजुर्गों की इज्जत करेंगे।

सब सतोप्रधान होने के कारण राग, द्वेष, ईर्ष्या आदि से परे होंगे।

इस प्रकार पाँचों प्रकार के राज्य का विस्तार बढ़ेगा। आत्मा 16 कला सम्पूर्ण से $15\frac{1}{2}$, $15\frac{1}{4}$, 15 ऐसी कम कलाएँ होती जायेंगी, प्रकृति भी परि-

वर्तन होगी। प्रकृति भी सतोप्रधान से सतो, रजो में क्रमशः आयेगी, जनसंख्या बढ़ती जायेगी। जैसे आज भी हमारे सेवा-केन्द्रों का लंबरूप विस्तार (Vertical expansion) सीमित (Limited) है और उसी कारण समतल-विस्तार (Horizontl Expansion) की भावना सेवा में ज्यादा रहती है। नये-नये स्थानों पर सेवाकेन्द्रों की स्थापना होती रहती है— सेवा के विस्तार के साथ-साथ भूमि विस्तार या हदों का भी विस्तार होता है और हद से बेहद में आते हैं। वैसे वहां बेहद से हद में आयेंगे। अनंत अंत होगा। प्रारंभ के अंदाज से 9,16,108 जनसंख्या में वृद्धि होती होती 2500 वर्ष में 33 कोटी अंदाज में देवी-देवता होंगे। तो जरूर व्यवस्था के लिये नियम बनाने पड़ेंगे। आज भी नियम बनाते हैं। मधुबन की सीज़न में, पार्टियों को इस दिन आना है, इस दिन जाना है, और इतने दिन रहना है। प्रारंभ में यह नियम नहीं थे। ब्रह्मा बाबा के तन में शिव बाबा सदा ही मिलते थे। रोज़ ही मीठी मुरली के महावाक्य सुनते थे। अब फिर नियम है कि प्यारे बाप-दादा की पधरामणी अब होगी, अब यह जोन मिले, अब यह पार्टी मिले। इसी तरह पहले विश्व महाराजन् अपने सब साथियों से उतने ही प्यार से मिलते होंगे, बाद में नियम बनेंगे। बाद में जनसंख्या के विस्तार के कारण राज्य का विस्तार करना पड़ेगा, नये नगर बसाना शुरू होगा। नये नगर में जरूर विशेषता होगी। जैसे आज सूक्ष्म प्रेरणा का स्रोत है मधुवन परंतु मधुवन के लिये स्थूल चीजों का स्रोत है सर्व सेवाकेन्द्र, उसी तरह से वहाँ नये नगरों का प्रेरणा स्रोत प्राचीन राजधानी का स्थूल स्रोत नये नगर होंगे। और यह लेन-देन की व्यवस्था सुचारु रीति से चले उसके लिए जैसे आज ज़ोन्स (Zones) की व्यवस्था हुई वैसे वहाँ पर भी राज्य व्यवस्था, कारोबार को सही रूप में चलाने के लिये बनानी पड़ेगी। संपूर्ण राज्य व्यवस्था वही है जहाँ दुर्घटनाएं (Accidents) न हों। आज के अनुभव वहाँ संस्कार के रूप में मददगार बनेंगे और जसे आज के व्यवस्था के रूप में बने हुए नियम बन्धन नहीं लगते किन्तु जरूरत मानी जाती है ऐसे ही वहाँ स्नेह और नियम (Love & Law) के बीच में पूर्ण स्नेह होने के कारण नियम में गम या कटुता नहीं लगेगी परंतु राज्य व्यवस्था के आवश्यक अंग होंगे। आज हम परिचय में कहते हैं कि मैं ब्रह्माकुमार-कुमारी हूँ और इस सेंटर और ज़ोन्स की का हूँ। ऐसे ही राज्य विस्तार तथा जनसंख्या बढ़ने के कारण नगर और छोटा राज्य कहने में आयेंगे और बाद में वही छोटे राज्य, राज्य (State या Country) बन जायेंगे।

आज व्यवस्था के लिये ज़ोन्स (Zones) बने हुए हैं जिससे कारोबार ठीक रीति से चले। उसी तरह वहाँ संख्या तथा हद (Boundaries) आदि की वृद्धि के कारण विस्तार को संभालने के लिये विशेष सत्ता, निमित्त कारोबार संभालने वालों को दी जायेगी और कारोबार की वृद्धि के साथ कारोबार चलाने की सत्ता भी मिलेगी। अर्थात् सत्ता का धीरे-धीरे विकेन्द्रीकरण होगा। विस्तृतीकरण के कारण जो विकेन्द्रीकरण होगा वह स्वाभाविक होगा और उसी कारण कोई धक्का (Jerks) नहीं लगेगा।

राज्य व्यवस्था के अन्दर सुरक्षा (Safety) को पूर्ण रूप से ध्यान में रखना पड़ता है। समाज सुरक्षित (Safe) है तो सुखी है और इसलिये आज के समाज में कानूनी व्यवस्था संभालने के लिये पुलिस, जज आदि की व्यवस्था है। दंड की व्यवस्था है। दंड देने-लेने वाले हैं। आज भी मधुबन में रात्रि में शाँति से विश्राम कर सकें उसी के लिये पहरा लगता है। जैसे सामान्य सुरक्षा जरूरी है ऐसा शुरू से माना जायेगा और उसके लिये वहाँ पर भी विनायक दल होंगे और उनमें धीरे-धीरे अस्त्र-शस्त्र की वृद्धि होगी। आज भी दादी-दीदी की जरूरत कई बातों में पड़ती है वैसे वहाँ राज्य सत्ताधीश के कानून बनाकर कानून का फैसला करना पड़ेगा। ब्रह्मा बाबा के साकार समय पर वह जो कहते थे वह कानून था परंतु बाद में उन्हीं बातों को कानूनी स्वरूप देने के लिये विधान बनाना पड़ा। उसी तरह से राज्य विस्तार के प्रारंभ के काल में महाराजा का शब्द कानून होगा परंतु हदों के विस्तार तथा संख्या के विस्तार के कारण विधान और कानून बनाने पड़ेंगे। कानून इसी तरह राज्य

विस्तार के समय मददगार अंग-साधन होंगे। सतोप्रधान व्यवस्था है उसी कारण कानून न्याय शास्त्र और स्नेह से (Logic & Love) संतुलन (Balanced) होगा। बाद में तमोप्रधान कानून की जरूरत तमोप्रधान आत्माओं के कर्मों पर नियंत्रण (Control) के लिये बनाने पड़ेंगे।

राज्य विस्तार के कारण अर्थ व्यवस्था भी बनानी पड़ेगी। आज हमारे यहाँ सतोप्रधान अर्थ-व्यवस्था है। एक परिवार के रूप में सब दैवी बहन-भाई यज्ञ-सेवा तथा अपना भाग्य बनाने अर्थ अपनी शक्ति अनुसार यज्ञ के आर्थिक कार्यों में मददगार बनते हैं। बाद में बिशेष प्रसंगों के लिये, जैसे देहली के महायज्ञ के लिये प्रतिदिन के 10 पैसे ऐसी व्यवस्था बनाई या अभी बनाये गये राजयोग एजुकेशन और रिसर्च फाउंडेशन (Rajayoga Education & Research Foundation) के लिये उसके प्रवेश की (Admission fee) अंशदान (Subscription) तथा इस अंशदान का 10 प्रतिशत हेड-ऑफिस के अर्थ व्यवस्था और 10 प्रतिशत जोन की मदद फाउंडेशन की अर्थ-व्यवस्था के लिये विभाजन किया है ऐसे ही सतयुग में राज्य व्यवस्था संभालने के लिये, उसमें मददगार बनने के लिये पहले-पहले ऐच्छिक अंशदान (Voluntary Contribution) की प्रथा, राजा-साहूकार प्रजा के अंदर रहेगी। सौगात यज्ञ के द्वारा हम बच्चों को मिलती है उसी तरह वहाँ एक परिवार के स्वरूप में प्रारंभ में प्रजा या साहूकार सौगात देंगे। हर एक के पास जरूरत से कई गुना ज्यादा धन-संपत्ति होगी उसी कारण वहाँ कर-निर्धारण (Taxation) प्रथा नहीं होगी। बाद में उसमें भी निमित्त कार्यों में निमित्त रूप से राज्य विस्तार तथा व्यवस्था के कारोबार में मददगार बनने के लिये अर्थ प्रथा या व्यवस्था बनेगी। मुख्य राजधानी तथा अन्य नगर तथा छोटे राज्य के साथ आज का अर्थ व्यवस्था कैसी हो उसके भी नियम बनेंगे। अर्थात राज्य विस्तार के कारण अर्थ व्यवस्था भी समय प्रति समय बदलेगी और अर्थ व्यवस्था के अर्थ-शास्त्र बनेंगे।

○ ○

# शान्ति-गीत

**ब्र० कु० मोहन, अमृतसर**

"शान्ति की शक्ति से
शान्ति जग में लानी है
शान्त मन हो, तन हो शीतल
ऐसी दुनिया बनानी है"

१ आदि गुण अनादि रूप
शान्ति तेरा है अधिकार
तेरे दैवी राज स्वर्ग में
शान्ति की थी सदा बहार
शान्ति की किरणों से
करुणा अब बरसानी है।

२ श्रेष्ठ कर्म का बीज शान्ति
इसमें छिपा है सुख का सार
दिव्य गुणों की खान यही है
शान्ति में है शिव का प्यार
तड़पती हुई हर आत्मा है
प्यास सबकी बुझानी है,

३ ज्ञान योग का दिव्य अनुभव
शान्ति में समाया है
शान्ति की सौगात लेकर
परमपिता शिव आया है
शान्तिधाम अपने घर की
राह सबको दिखानी है।

४ शान्ति की चाह सभी की
मिल जाये शान्ति वरदान
जन्मों से जो भटक रहे हैं
देना उनको शान्ति दान
शान्ति सागर वरदाता की
वाणी सबको सुनानी है।

धुलिया में सर्व धर्म परिषद धर्म सम्मेलन के शुभ अवसर पर ब्र० कु० मीरा प्रवचन करती हुई दिखाई दे रही है, भ्रष्टाचार निर्मूलन मोहिम की महिला तथा अन्य वक्तागण बैठे हैं।

बोकारो में (बालीडीह) आध्यात्मिक प्रदर्शनी का उद्‌घाटन वहाँ के थाना अधिकारी भ्राता अरुण कुमार सिन्हा जी ने किया, साथ में भ्राता रतनलाल जी, ब्र० कु० कुसुम व सुमन जी खड़ी हैं।

कटक में यूनिवर्स के प्रेजीडेन्ट भ्राता डा० गिरजा-प्रसाद भूषण पटनायक जी अपने विचार सुना रहे हैं, साथ में ब्र० कु० कुलदीप जी, व मंजू जी दिखाई दे रही हैं।

चन्दौसी मेला में भ्राता विजय बाबू, भ्राता सुरेश जी व अन्य प्रदर्शनी देखने के बाद सौगात लेते हुए दिखाई दे रहे हैं।

# आध्यात्मिक सेवा समाचार

**ब्र० कु० लक्ष्मण, सत्यनारायण, कृष्णा नगर, देहली द्वारा संकलित**

**आबू पर्वत**—ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व विद्यालय के मुख्यालय में चल रहे राजयोग धारणा प्रशिक्षण शिविर में बेंगलोर सेवाकेन्द्र की ओर से हाईकोर्ट के जस्टिस भ्राता ए० के० लक्ष्मेश्वर पधारे थे। उन्होंने मुख्यालय में चल रही हर कार्य विधि को भली-भाँति देखा तथा अनुभवी राजयोगी भाई बहिनों की क्लासेज भी सुनी। हाईकोर्ट के जस्टिस के साथ-साथ स्प्रीचुअल जस्टिस बनने की प्रेरणा लेने के पश्चात आपने अपने अनुभव में बताया कि "सौभाग्यशाली हैं वे लोग जिन्होंने अपने जीवन का कुछ भी समय मधुवन के पवित्र व शान्त वातावरण में बिताया है। वास्तव में ही मधुबन, इस धरती का स्वर्ग है। यहाँ के प्रबन्धकों द्वारा इतनी सुन्दर व्यवस्था यहाँ की गई है जो कि इस क्षेत्र में चारों ओर शान्ति ही शान्ति है। जो भी यात्री यहाँ आता है उनसे ऐसा ही व्यवहार किया जाता है जैसे कि वे भगवान के बच्चे हों। यहाँ पर चिन्ता, क्रोध आदि विकार कहीं भी दिखाई नहीं देते। यहाँ सभी के चेहरों पर शान्ति व मुस्कुराहट दिखाई देती है। इस ईश्वरीय विश्व विद्यालय के ज्ञान व शिक्षाओं से कोई भी मनुष्य भगवान के समीप पहुँच सकता है, उसे प्राप्त कर सकता है और उससे बातें भी कर सकता है।"

**लण्डन**—समाचार मिला है कि सेवाकेन्द्र पर कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों के लिए एक स्नेह मिलन का आयोजन किया गया—जिसमें मुख्य अतिथि के रूप में डा० कारपेन्टर, वेस्ट मिनिस्टर अब्बे तथा मिसेज कारपेन्टर एवं अन्य कई प्रतिष्ठित व्यक्ति सम्मिसित हुए। डा० कारपेन्टर ने आबू कानफ्रेंन्स का आँखों देखा समाचार अनुभव के रूप में सुनाते हुए कहा—कि कानन्फ्रेस में आध्यात्मिकता तथा समाज की स्थिति अथवा राजनैतिक व वैज्ञानिक बातों का बहुत सुन्दर ढंग से समन्वय था। मैंने सारा ही समय खुशी और सहयोग का वातावरण देखा। कहाँ भी जोश या नाराजगी नहीं देखी। उन्होंने कहा कि ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व विद्यालय पूर्वी देशों की आन्तरिक आत्मिक उन्नति तथा पश्चिमी संसार के उत्थान की बातों का समागम कर रहा है।" मिसेज कारपेन्टर ने आबू के पवित्र वातावरण की प्रशंसा करते हुए बताया कि मैंने देखा—वहाँ के वातावरण में बहुत स्वच्छता थी और इतना हल्का वातावरण था जो मन को स्वत: आराम मिलता था।

**सिंगापुर**—प्राप्त समाचार के अनुसार ब्र० कु० ईश्वरीय विश्व विद्यालय को एक धर्म संस्थाओं की गोष्ठी में सम्मिलित होने का निमन्त्रण प्राप्त हुआ। सेवाकेन्द्र इन्चार्ज ब्र० कु० मीरा बहन ने सर्व धर्मों के प्रतिष्ठित व्यक्तियों के सम्मुख ईश्वरीय विश्व विद्यालय का परिचय देते हुए आबू कानफ्रेन्स का समाचार सुनाया। तथा इस अवसर पर सभी धर्मावलम्बियों को कानफ्रेन्स में प्रस्तावित पीस चार्टर तथा रिलीजश चार्टर भेंट किया। उसी समय "धर्म और शान्ति से सम्बन्धित "एशियन कानफ्रेन्स के १० युवक जापान से पधारे थे उन्हें भी यूथ चार्टर तथा ईश्वरीय साहित्य दिया गया। इसके इलावा शहर के सभी नामीग्रामी प्रतिष्ठित व्यक्तियों को पीस चार्टर तथा पीस मैनीफैस्टव भेंट किया गया है। बताया जाता है कि "नशीली वस्तुओं के आदि होने वाले जिन व्यक्तियों को कैद दी गई है, उनको राजयोग सिखाने के लिए सरकार की ओर से अनुमति मिली है। इसके ईलावा सेवाकेन्द्र पर "वर्ल्ड हेल्थ डे" मनाया गया। जिसमें कारडियोलाजिस्ट और फिजीशियन मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित थे। हेल्थ योगा टीचर भ्राता एरीका खू ने भी इस विषय पर अपने विचार व्यक्त किये। ब्र० कु० डा० निर्मला बहन ने "स्वस्थ शरीर में स्वस्थ मन" नामक विषय पर प्रवचन किया।

**चण्डीगढ़**—कसौली के आसपास की शिवालिक पर्वत शृंखला पर नौ द्विसीय विभिन्न आध्यात्मिक कार्यक्रमों का चण्डीगढ़ तथा कसौली सेवाकेन्द्र की ओर से आयोजन किया गया। इन कार्यक्रमों से इस पर्वतीय क्षेत्र की हजारों आत्माओं ने लाभ लिया। इनमें से मुख्यत: गाँव चटियान, खच्चरखाना, सी० आर० आई की कालोनी, एम० ई० एस० कालोनी में आध्यात्मिक प्रवचनों, दिव्य गीतों एवं विश्व नव निर्माण आध्यात्मिक प्रोजेक्टर शो के कार्यक्रम चले। इसके अतिरिक्त कुछ प्रतिष्ठित व्यक्तियों व्यक्तिगत मुलाकात के दौरान ईश्वरीय सन्देश दिया गया। इसी तरह

धर्मपुर शहर में दो दिन के लिए वहाँ के पंचायत घर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया।

**रांची**—सेवाकेन्द्र की ओर से डालटनगंज, नामक स्थान पर राजमणी धर्मशाला में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन जिला स्कूल के प्राचार्य भ्राता सूर्यदेव नारायण सिंह जी ने किया। वहाँ के प्रसिद्ध विष्णु मन्दिर में पन्द्रह दिन तक दोपहर इसे ५ बजे तक प्रवचन होते रहे, जिसमें माताओं ने विशेष लाभ लिया।

**दिल्ली**—पहाड़ गंज सेवाकेन्द्र से प्राप्त समाचार के अनुसार मिन्टो रोड कम्पलैक्स में एक त्रिदिवसीय चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त तीन दिन का राजयोग शिविर भी उसी स्थान पर रखा गया जिसमें अनेक आत्माओं ने भाग लिया। पहाड़गंज से सम्बन्धित नरेला सेवाकेन्द्र के भाई बहिनों को एक सनातन धर्म मन्दिर में राम नवमी समारोह में प्रवचन करने का निमन्त्रण मिला। ब्र० कु० बहनों ने श्रीराम की महिमा का वर्णन करते हुए बताया कि हम सबको श्रीराम जैसा आदर्श जीवन बनाना है।

**कानपुर**—किदवई नगर सेवाकेन्द्र द्वारा नवरात्रि पर्व पर बारह देवी प्रांगण में एक लघु मेला प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। प्रदर्शनी के पूर्व शहर के मुख्य मार्गों से एक प्रभात फेरी भी निकाली गई। प्रदर्शनी के मध्य सिंहवाहिनी दुर्गा देवी का भव्य मण्डप जनता को अपनी ओर आकर्षित कर रहा था।

**बड़ौदा**—प्राप्त समाचार के अनुसार फिलीपाइन तथा सिंगापुर आदि स्थानों पर ईश्वरीय सेवा करने के पश्चात ब्र० कु० डा० निरंजना बहन जब भारत पहुँची तो बड़ौदा सेवाकेन्द्र की ओर से उनके स्वागत तथा अनुभवों के कार्यक्रम जगह-जगह पर आयोजित किये गये। सर्व प्रथम कारेली बाग में आयोजित एक कार्यक्रम में कांग्रेस आई के मंत्री भ्राता रणजीत चौहान तथा अन्य कई प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने आपका स्वागत किया। इस अवसर पर बड़ौदा के मेयर जयन्ती भाई राव जी भाई पटेल उपस्थित थे। डा० निरंजना बहन ने अपनी विदेश यात्रा का अनुभव सुनाते हुए कहा कि भारत के प्रति विदेशियों में विशेष श्रधा है वे भारत की प्राचीन संस्कृति को जानने तथा राजयोग सीखने की विशेष रूची रखते हैं।

**हनुमानगढ़**—प्राप्त समाचार के अनुसार भद्रकाली के मेले और शिला पर तीन दिन के लिए अलग-अलग स्थानों पर प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। लगभग ७००० आत्माओं ने इसका लाभ प्राप्त किया। बताया जाता है कि शिला पर हर सप्ताह मेला लगता है, उस मेले में कोई न कोई आध्यात्मिक कार्यक्रम भी आयोजित किया जाता है। अभी स्थायी रूप से म्यूजियम बनाने का भी तय हुआ है।

**कटक**—समाचार मिला है कि कटक सेवाकेन्द्र से सम्बन्धित कौझर उपसेवाकेन्द्र के दूसरे वार्षिक उत्सव पर वहाँ के प्रसिद्ध गुजराती समाज भवन में प्रवचन तथा प्रोजेक्टर शो का कार्यक्रम रखा गया। इसी प्रकार आनंदपुर गाँव में प्रोजेक्टर शो तथा प्रवचन के कार्यक्रम चले। सुन्दरगढ़ जिले के बडसुंआ गाँव में प्रवचन चले।

**कानपुर**—सिविल लाइन सेवाकेन्द्र की ओर से कचहरी के चौराहे पर पार्क में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन कानपुर के डी० एम० भ्राता हरीश चन्द्र गुप्ता जी ने किया। इस प्रदर्शनी को अनेक वी० आई० पी० और हर एक वर्ग के लोगों ने देखा, राजयोग शिविर किया तथा लाभ उठाया।

**मेरठ**—समाचार मिला है कि आदरणीय दादी जी के आगमन पर मेरठ के कई अच्छे वी० आई० पी० की सेवा की गई, इसके अलावा एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन भ्राता वी० एस० विनोद जी ने किया। आप मेरठ के मुख्य दैनिक समाचार पत्र 'प्रभात' के वरिष्ट पत्रकार हैं।

**अहमदाबाद**—मणिनगर के नजदीक घोड़ासर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी व चैतन्य देवियों की झाँकी का आयोजन किया गया। जिसका उद्घाटन कुमुद भाई पटेल जी ने किया। इस अवसर पर राजयोग शिविर का भी आयोजन किया गया। राम नवमी के अवसर पर भी आध्यात्मिक प्रोग्राम रखे गये।

बापू नगर सेवाकेन्द्र के द्वितीय वार्षिकोत्सव निमित राम नवमी के पर्व के दिन "रामराज्य" पर एक सुन्दर सेमीनार का आयोजन किया गया। इस अवसर पर अतिथि के रूप में गुजरात हाईकोर्ट के न्यायाधीश भ्राता कुरेशी जी पधारे थे।

**गाँधीनगर**—जन-जन को ईश्वरीय सन्देश देने हेतु ईश्वरीय सेवा का अनेक कार्यक्रम रखा गया, सेवाकेन्द्र के नये मकान में झाँकी व आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। गाँव-गाँव तक ईश्वरीय सन्देश देने के लिए

आध्यात्मिक प्रोग्राम रखे गये।

**तेजपुर**—समाचार मिला है कि तेजपुर के पास लोखड़ा नामक गाँव में शिव मन्दिर में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी। यह मिलेट्री का गाँव है मिलेट्री के मुख्य अधिकारी सी० ओ० भ्राता सुरेन्द्रकुमार जी अतिथि के रूप में पधारे थे। आप ने प्रदर्शनी का उद्घाटन टेप काट-कर किया। प्रदर्शनी देखकर आप बहुत प्रभावित हुए ज्ञान की सच्चाई का आपको अच्छा ही अनुभव प्राप्त हुआ।

**चाँदनी चौक (दिल्ली)**—समाचार मिला है कि दरिया-गंज क्षेत्र में एक आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन भ्राता महेन्द्रकुमार जैन युनिसि० काऊन्सर दिल्ली ने किया। आप ने प्रदर्शनी देखकर बहुत प्रभावित हुए। इसके अतिरिक्त कांग्रेस (आई) के अध्यक्ष भ्राता रामनाथ शर्मा जी एवं अन्य अनेकानेक गणमान्य व्यक्तियों ने प्रदर्शनी का अवलोकन किया तथा विशेष लाभ प्राप्त किया। आप लोगों ने प्रदर्शनी में विशेष सहयोग दिया।

**हुबली**—समाचार मिला है कि जेल में कैदियों की विशेष सेवा की गयी। उनको योग का अभ्यास भी कराया गया। जेल के मुख्य अधिकारी जी ने इस प्रोग्राम से बहुत प्रभा-वित हुए। उन्होंने कहा कैदियों के मानसिक परिवर्तन में यह ईश्वरीय विश्व विद्यालय विशेष लाभप्रद होगा। और यही ईश्वरीय ज्ञान शान्ति का वातावरण बना सकता है।

**टाटा नगर**—समाचार मिला है कि जुगसताई में राज-स्थान शिव मन्दिर में आध्यात्मिक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्घाटन टाटा स्टील के स्पेशल एड-वाइजट एच० पी० जी ने किया। इस अवसर पर राजयोग शिविर व सत्संग का विशेष आयोजन किया गया।

**मणिनगर**—सेवाकेन्द्र की ओर से चलोडा गाँव की कुमार शाला में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी चैतन्य देवियों की झाँकी का प्रोग्राम रखा गया। प्रदर्शनी का उद्घाटन गाँव के पंचायत के अध्यक्ष भ्राता बाबू भाई अमीन तथा झाँकी का उद्घाटन प्रिन्सिपल राव जी भाई पटेल द्वारा सम्पन्न हुआ। इस प्रदर्शनी व झाँकी से अनेकानेक आत्माओं ने लाभ प्राप्त किया।

**जयपुर**—राजा पार्क सेवाकेन्द्र की ओर से स्टाफ कालोनी के गेस्ट हाउस में दो दिन की प्रदर्शनी रखी गयी। स्टाफ के परिवार वालों को परमात्मा का दिव्य सन्देश दिया गया। प्रदर्शनी में अधिशासी अभियंता व अन्य प्रतिष्ठित व्यक्ति पधारे। अभी वहाँ नियमित क्लासेज चल रही हैं।

**आजमगढ़**—मऊनाथ भंजन उप सेवाकेन्द्र द्वारा कताई मिल परदहा, मऊनाथ भंजन में चरित्र निर्माण राजयोग प्रदर्शनी तथा प्रवचन का कार्यक्रम रखा गया था जिसका उद्घाटन उस मिल के भ्राता आर० के० वर्मा स्पीनिंग सुपरिटेन्डेन्ट ने किया। इस प्रदर्शनी से अनेकों आत्माओं को विशेष लाभ मिला।

**इटारसी**—समाचार मिला है कि ग्राम शाहगंज में चरित्र निर्माण प्रदर्शनी का आयोजन किया गया जिसका उद्-घाटन सरपंच द्वारा हुआ।

**पानीपत**—सेवाकेन्द्र की ओर से जी० टी० रोड पर आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गई जिसका उद्घाटन भाई कस्तूरी लाल अहूजा जी ने किया। इस प्रदर्शनी को बहुतों ने देखा तथा लाभ उठाया।

**जोधपुर**—के विशाल स्टेडियम मैदान में एक भव्य मेले का आयोजन किया गया जिसमें एक स्टाल हमें भी निःशुल्क जन सेवार्थ दिया गया। इस स्टाल में चरित्र निर्माण आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाई गयी।

**जंबुसर**—सेवाकेन्द्र की ओर से आमोद तालुका प्लेस में तालुका पंचायत के प्रमुख भ्राता दौलतसिंह के निवास स्थान में राजयोग शिविर का आयोजन किया गया राजयोग शिविर से अनेकानेक आत्मायें लाभ प्राप्त कर रही हैं।

**सिद्धपुर**—सिद्धपुर में नये योग कक्ष का उद्घाटन स्वामी प्रकाशानन्द जी (आचार्य महामण्डलेश्वर हरिद्वार) ने किया समोड़ा विद्यापीठ में विद्यार्थियों को श्रेष्ठ चरित्रवान जीवन कैसे बने ? विषय पर प्रभाव डाला गया। अनेक आत्माओं ने इस प्रोग्राम से लाभ प्राप्त किया।

**सीरसी**—समाचार मिला है कि यहाँ पर एक विशाल मेला लगता है इस मेले में ईश्वरीय विश्व विद्यालय को भी एक बड़ा स्टाल आध्यात्मिक प्रदर्शनी लगाने के लिए मिला। वहाँ पर "विश्व शान्ति राजयोग प्रदर्शनी" लगाई गयी।

जगदीश चन्द हसीजा, मुख्य सम्पादक, ब्र० कु० आत्म प्रकाश, सम्पादक, बी 9/19 कृष्णानगर, दिल्ली द्वारा सम्पादन तथा संजीव प्रिंटर्स, महिला कालोनी, गांधीनगर, दिल्ली-३१ से छपवाया, Regd. No. 10563/65-D, (E)—70